चन्दामामा
सितम्बर १९८७
2
50
Rs

**"बनता है ये खेल खेल में हँसी खुशी में, रेल पेल में
सोच समझ कर झट चिपकाओ
मौज-मौज में इसे बनाओ"**

— फ़ेवी फ़ेयरी

"जादू का करिश्मा नहीं
हाथ का कमाल है
पैसे का सवाल नहीं
काम बेमिसाल है।"
"जल्दी आकर हमें बताओ
करना क्या है—यह समझाओ।"
"जल्दी आओ
सब कुछ सुन लो....
सोचो समझो झट चिपकाओ
फ़ेविकोल एम आर को लाओ
मोर बनाओ,
गुड़िया, टोकरी, पर्स बनाओ
न चिप-चिप है, न है गंदगी
मज़े-मज़े में करते जाओ
करते जाओ॥"
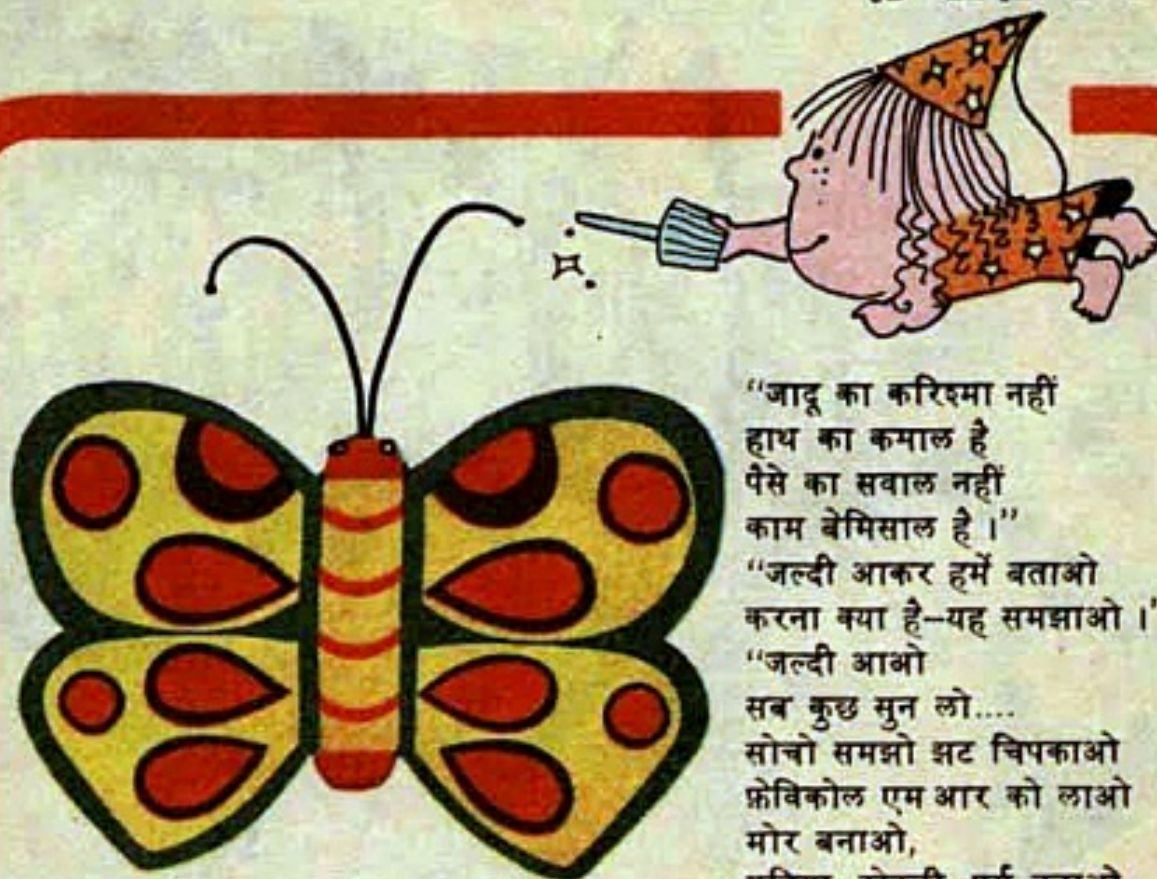
इस तितली को बनाने की क्रमवार रीति
मुफ़्त प्राप्त करने के लिए यह कूपन भेजिए
इस पते पर लिखिएः 'फ़ेवी फ़ेयरी'
पोस्ट बॉक्स ११०८४, बम्बई ४०० ०२०

इस तितली को बनाने की क्रमवार रीति मुफ़्त प्राप्त करने के लिए, यह कूपन 'फ़ेवी फ़ेयरी' पोस्ट बॉक्स ११०८४ बम्बई ४०० ०२० के पते पर पोस्ट कर दो

नाम ____________________
उम्र ____________________
पता ____________________
____
नगर ____________________
राज्य __________ पिन __________

क्या आपको हमारा जंगल फ़ेविक्राफ्ट मिल गया है/नहीं

फ़ेविकोल एम आर
सिन्थेटिक एढ्हेसिव

उत्तम काम, उत्तम नाम फ़ेविकोल का यह परिणाम

® ये [logo] और फ़ेविकोल ब्राण्ड दोनों पिडिलाइट इण्डस्ट्रीज़ प्रा. लि. बम्बई ४०० ०२१ के रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.

OBM-1214 HN

डायमंड कॉमिक्स में

कार्टूनिस्ट प्राण का

दाबू और खतरनाक कैपशूल 5/-

48 पृष्ठों में भरपूर मनोरंजन

इस माह के अन्य नये डायमण्ड कॉमिक्स—

मूल्य प्रत्येक 5/-

अंकुर बाल बुक क्लब

डायमंड कॉमिक्स की बच्चों के लिये नई निराली अनुपम योजना अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनिये और हर माह घर बैठे, डायमंड कॉमिक्स डाकव्यय की फ्री सुविधा के साथ प्राप्त करें।

सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :–

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसंद हों तो डायमंड कॉमिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

सदस्यता कूपन

मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।

नाम ....
पिता का नाम ....
पता ....
डाकखाना ....
जिला ....
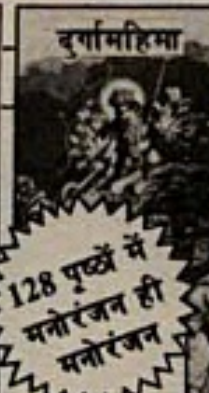
अन्य डायमंड कॉमिक्स डाइजेस्ट

चाचा चौधरी डाइजेस्ट-I
चाचा चौधरी डाइजेस्ट-II
लम्बू मोटू डाइजेस्ट-I
ताऊजी डाइजेस्ट-I
राजन इकबाल डाइजेस्ट-I
फौलादी सिंह डाइजेस्ट-I
मोटू पतलू डाइजेस्ट-I
चाचा भतीजा डाइजेस्ट-I

चाचा चौधरी-III
पिंकी-I
बिल्लू-I
महाबली शाका-I
फौलादी सिंह-II
लम्बू मोटू-II
ताऊजी-II
मोटू पतलू-II

रामायण
कृष्णलीला
दुर्गा महिमा
पंचतंत्र
हितोपदेश
जातक कथायें
चाचा भतीजा-II

मूल्य प्रत्येक 12/-

डायमंड कॉमिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

पिकविक कैसे 'आइस्क्रीम-डुबकी'

मुफ़्त! लुभावना स्टिकर—
१५ ग्राम के
१२ पैकटों के साथ!

कई मज़ेदार ज़ायकों में मिलते हैं.

खाया जाये.

विधि.

"एक कटोरे में आइस्क्रीम लो.
पिकविक से डुबकी लगाकर आइस्क्रीम निकालो
और खाओ. एक पिकविक कटोरा पोंछने के लिए बचाकर रखो.
दीदी के कटोरे को ललचायी नज़र से देखते रहो जब तक
वह तुम्हें अपना पिकविक न दे दे."

पिकविक क्रीमी वेफर्स

मज़ेदार, कुरकुरे...
मीठी-मीठी क्रीम भरे.

Contract-TW-38/87 Hn. R
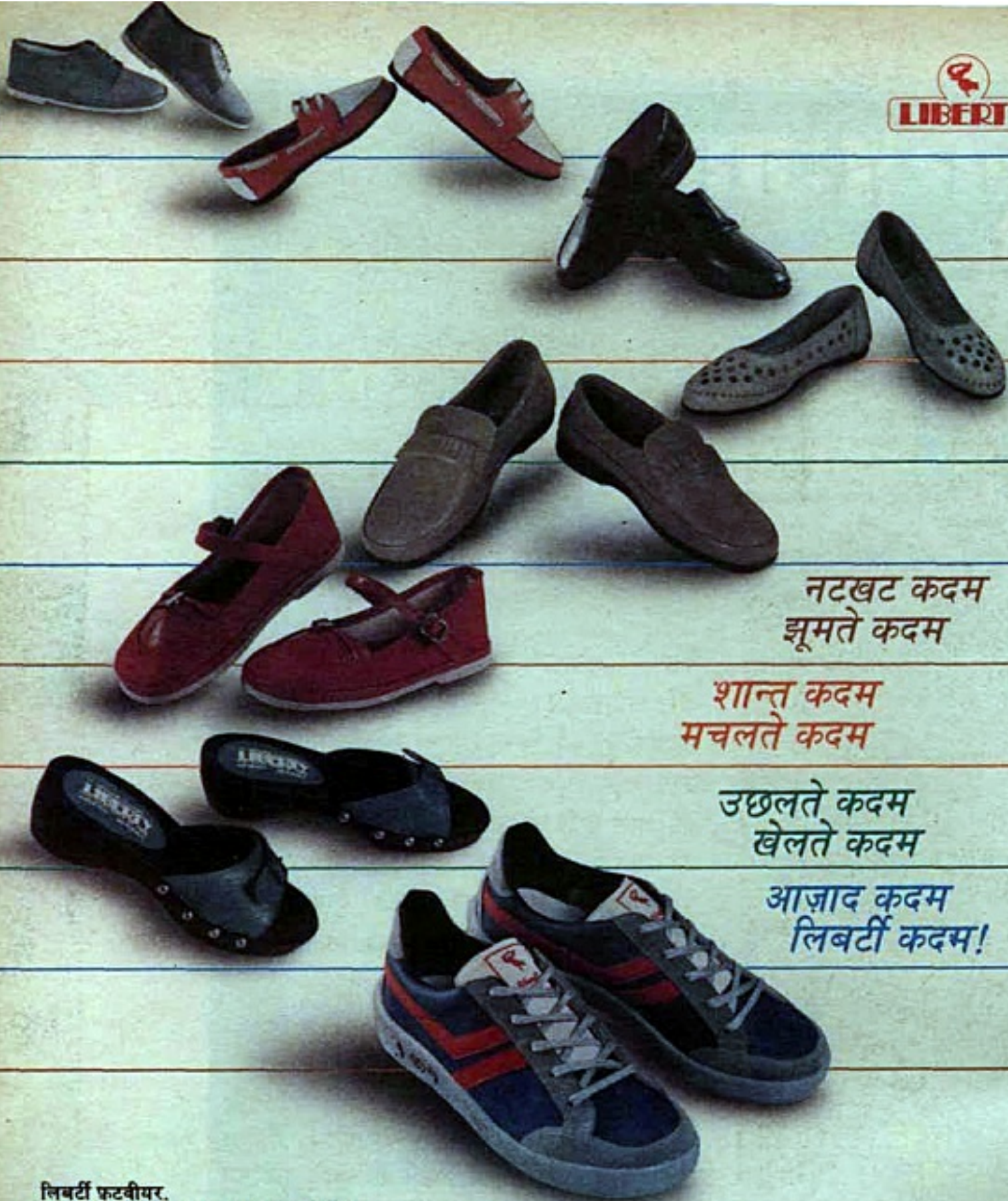
LIBERTY
नटखट कदम
झूमते कदम
शान्त कदम
मचलते कदम
उछलते कदम
खेलते कदम
आज़ाद कदम
लिबर्टी कदम!
लिबर्टी फुटवीयर.
स्कूल तथा खेलकूद में नन्हें कदमों की मौज-मस्ती के लिये मनभावन रंगों और डिज़ाइनों की सुन्दर श्रृंखला.
साथ ही 100% इम्पोर्टेड P.U. से बना हल्का-फुल्का और रगड़ से बेअसर सोल जो शरीर के बोझ को एड़ी तथा पंजे तक सीमित न रख बराबर अपने अन्दर समा लेता है. और नतीजा, पांव को पूरा सहारा तथा आराम.
LIBERTY
हमेशा एक कदम आगे!
पी.ओ. बॉक्स नं. 103, करनाल-132001
केवल हमारे एक्सक्लूसिव शोरूमों और अधिकृत डीलरों से ही खरीदें.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

देश के अनजान कोनों में बसे गाँवों की प्रजा किन कठिनाईयों का सामना करती है और उनकी समस्याओं को किस प्रकार सुलझाया जा सकता है, ये बातें बहुत बार राजधानी में वास करनेवाले शासकों को ज्ञात नहीं हो पातीं। राज्य के छोटे पदाधिकारी भी अपने कर्त्तव्य को भूलकर इन साधारण ग़रीब नागरिकों की अवमानना करते हैं। "राज-दर्शन" शीर्षक कहानी में हमें इस तथ्य का बोध होता है।

अमर वाणी

उत्तमः क्लेशविक्षोभं, क्षमः शोढुं न हीतरः।
मणिरेव महाशाणघर्षणं, न तु मृत्कणः॥

[उत्तम पुरुष ही दुःख, क्षोभ और हानि को सहन करने की क्षमता रखते हैं, साधारण मानव नहीं। महाशाण-यंत्र का घर्षण मणि ही सहन कर सकती है, मिट्टी का कण नहीं।]

वर्ष : ४०　　सितम्बर १९८७　　अंक : १

एक प्रति : २-५०　::　वार्षिक चन्दा : ३०-००

केवल खिलौने कॉमिक्स और
रवि को चाहिए कुछ और
खुद ही सोचे, खुद ही बनाए
जिससे तबियत खुश हो जाए
एको पेन सेट उसने उठाया,
घर के ऊपर मोर बनाया,
डैडी की मूंछें, एक शिकारी
एक कबूतर, एक भिखारी.
एको हरे और एको पीले
लाल और ऑरेंज, भूरे, नीले
काले, बैंगनी, वायलेट, गुलाबी
अब तो स्केच पेन एको ही लें.
EKCO
एको
स्केच पेन रंगों से यारी, मौज-मस्ती तुम्हारी!
प्रिसिज़न राइटिंग पॉइन्ट्स प्रा. लि. १८, सुभाष रोड, विले पारले (पूर्व), बम्बई-४०० ०५७.
फोन : ६०४०३०५, ६०४३५५६.

'चन्दामामा' के संवाद
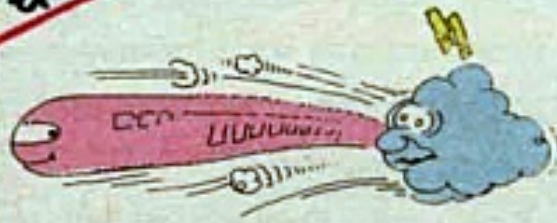
उड़ने वाली रेलगाड़ी

जापान में वायु में उड़ने वाली रेलगाड़ियों का प्रवेश होने जा रहा है। हवा में उड़ने के लिए इन गाड़ियों में पंख अथवा प्रोफेल्लर जैसे यंत्रों की व्यवस्था नहीं। केवल चुबंक शक्ति के बल पर ये गाड़ियाँ चलेंगी।

३,००० वर्ष का लंगर

तमिल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध जलातंर्गत पुरातत्व शाखा के सदस्यों ने हाल ही में मन्नार खाड़ी के उस पार एक लंगर का पता लगाया है। ऐसा माना जाता है कि क़रीब एक टन बज़नदार इस लंगर का उपयोग भारतीय नाविकों ने ३,००० वर्ष पूर्व किया था।

अज्ञात उड़नतशूरियाँ

चीन के सेंट्रल षुचुवल प्रांत में नील गगन में बदामी रंग की तशूतरियों को २० मिनट तक उड़ते देखकर बीस से अधिक दर्शकों के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा।

दुर्ग में स्वर्ण

तिरुपति के समीप स्थित चंद्रगिरि दुर्ग में बारह वर्ष का एक बालक ज़मीन खोद रहा था। तभी उसे स्वर्णमुद्राओं से भरा एक घड़ा दिखाई दिया। उसने पुलिस को तत्काल समाचार दिया। ऐसा ज्ञात हुआ है कि ये सिक्के विजयनगर साम्राज्य के काल के हैं।

प्राचीन चरित्रः
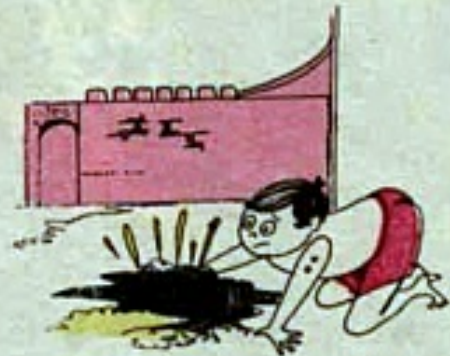
कंथ

कंथ महर्षि कण्व का पुत्र था। उसने एक बार गोमती नदी के किनारे कठोर तप आरंभ किया। कंथ की तपस्या में विघ्न डालने के लिए इंद्र ने प्रमलोचना नाम की एक अप्सरा को भेजा। प्रमलोचना ने अपने रूप-लावण्य, नृत्य-गान आदि के द्वारा कंथ के मन को आंदोलित कर दिया। कंथ ने उसके साथ विवाह किया।

सुन्दर अप्सरा के संसर्ग में कंथ के दिन, माह एवं बरस बीतने लगे। कंथ ने भोग-विलास का जीवन जीते हुए जप-तप का पूर्ण विस्मरण कर दिया।

एक दिन संध्या के समय कंथ एक पहाड़ी शिखर पर एकान्त में बैठा हुआ सुर्यास्त के दृश्य को निर्निमेष नयनों से ताक रहा था। सहसा उसके मन में यह विचार कौंध गया कि यह उसके संध्या-वंदन का समय है। वह तत्काल उठा और ध्यान में बैठने के लिए मृगचर्म को ढूंढ़ने लगा। तभी वहाँ प्रमलोचना आयी और कंथ को मृगचर्म ढूंढ़ते देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ी।

प्रमलोचना को हँसते देख कंथ को बड़ा विस्मय हुआ। उसने पूछा, "तुम्हारी इस विकृत हँसी का क्या कारण है?"

"आज आपको सैकड़ों वर्षों बाद जप-तप का स्मरण आया है न!" प्रमलोचना ने कहा।

"सैकड़ों वर्ष बाद?" कंथ ने चकित होकर पूछा।

"हां, नौ सौ वर्ष छह महीने तथा तीन दिन पहले आपने मेरे साथ विवाह किया था। आपको जप-तप छोड़े हुए इतना काल व्यतीत हो चुका है।" प्रमलोचना बोली।

"ओह! ऐसा है!" कहकर कंथ ने लज्जा से सिर झुका लिया। कंथ को अपने समय के नष्ट होने का अपार दुख हुआ। वह पश्चात्ताप के कारण वहाँ से एक प्रशान्त एकान्त वन में चला गया और कठोर तप करने लगा। इसके बाद किसी भी भौतिक आकर्षण ने उसके तप में विघ्न उपस्थित नहीं किया। उसने कुछ ही काल में तपोसिद्धि प्राप्त की।

राज-दर्शन

रामगिरि का निवासी धनपतराय सच्चा और ईमानदार पुरुष था। उसके नाम से धन का सम्बन्ध अवश्य था, पर वास्तव में वह अत्यन्त ग़रीब था और आसपास के घरों में छोटे-मोटे काम करके अपना पेट पालता था।

रामगिरि का निवासी ही शिवनाथ भी था। वह एक कलाकार था। एकबार वह राजधानी स्वर्णगिरि में गया और वहाँ अपनी विद्या का प्रदर्शन कर काफ़ी धन कमा लाया। राजधानी में जाते समय वह एक साधारण मनुष्य था, पर अब वह अच्छा ख़ासा धनवान आदमी था।

शिवनाथ का एकाएक इतना धनी हो जाना धनपतराय को बड़ा आश्चर्यजनक प्रतीत हुआ। उसने शिवनाथ से भेंट की और राजधानी तथा राजा के बारे में सारी बातें जाननी चाहीं।

शिवनाथ ने सारी बातें बड़ी प्रसन्नता से बतायीं और कहा, "हमारे देश के राजा कण्दिव अद्‌भुत व्यक्ति हैं। वे तो साक्षात अवतार पुरुष हैं। अत्यन्त शूरवीर और न्यायप्रिय हैं वे। ऐश्वर्य में कुबेर के समान हैं। दानशीलता में उनकी तुलना शिवि, बलि और कर्ण आदि से की जा सकती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि महाराज कण्दिव अपनी प्रजा को संतान से भी बढ़कर प्रेम करते हैं

धनपतराय ने सोचा कि एक ही दिन में शिवनाथ की कुंडली को बदलनेवाले राजा के बारे में इन सब बातों का सच होना असंभव नहीं है। अपनी इस भावना से प्रेरित होकर उसने अन्य कई लोगों के सामने राजा कर्णदिव के विषय में चर्चा की। और लोगों ने भी अपनी अपनी जानकारी के अनुसार राजा कण्दिव की प्रशंसा की

धनपतराय को पता लगा कि राजा कण्दिव प्रजा के लिए अनेक कल्याणकारी कार्य कर रहे हैं। जिन प्रदेशों में फ़सलें नष्ट होगयीं या पैदावार नहीं हुई, वहाँ कर माफ़ किया जा रहा है।

अकाल-पीड़ित क्षेत्रों में अन्न-धान बाँटा जारहा है

बहुत समय से दूसरों के घरों में साधारण सेवाएँ कर पेट पालनेवाला धनपतराय इन बातों से सर्वथा अनभिज्ञ था। पर जब उसे राजा कर्णदेव के अपार गुणों का परिचय प्राप्त हुआ, तो उसके मन में ऐसे सद्पुरुष के दर्शन की तीव्र लालसा पैदा हुई। वह उसी दिन से राजधानी जाने के लिए धन संचय करने लगा। पैसा बचाने के लिए वह जब-तब उपवास भी कर लिया करता था।

धनपतराय को मेहनत करते एक वर्ष बीत गया। उसने अपने कंधे पर एक छोटी-सी गठरी रखी और राजधानी से लिए चल पड़ा। राजधानी स्वर्णगिरि पहुँचने के पश्चात् वह राजभवन गया और राजा के दर्शनों के लिए पहरेदारों से पूछताछ की।

एक पहरेदार ने हँसकर कहा, "राजा अगर तुम जैसे भिखारियों से मिलने में अपना समय नष्ट करने लगेंगे तो फिर राज्य का शासन कौन करेगा?"

"मैं केवल एक बार उनके दर्शन करना चाहता हूँ। मैं भिखारी नहीं हूँ। मैं उनसे कुछ माँगूगा नहीं।" धनपतराय ने सरलता से कहा।

पर धनपतराय की बातों का पहरेदारों पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने उसे अन्दर नहीं जाने दिया। निराश होकर धनपतराय वहाँ से चल पड़ा। उसने एक नागरिक से सलाह ली। प्रेमदत्त नाम के उस भले नागरिक ने उसे समझाकर कहा, "तुम जल्दबाजी मत दिखाओ। निराश होकर गाँव लौटना ठीक न होगा। हमारे महाराज देवतातुल्य हैं। तुम प्रतिदिन पहरेदारों से खुशामद करते रहो। एक न एक दिन वे अवश्य तुम्हें महाराजा के दर्शन करा देंगे।"

प्रेमदत्त की बातों से धनपतराय को बड़ा सहारा मिला। उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि राजा के दर्शन किये बिना गाँव नहीं लौटेगा।

पर अब उसके सामने रात बिताने की समस्या थी। गाँव होता तो वह किसी के मकान के चबूतरे पर भी सो सकता था। पर यहाँ क्या करे? हर गली में पहरेदार चक्कर लगा रहे हैं। वे किसी भी अजनबी को गली में नहीं रहने देते। पचास सवाल पूछते हैं। हारकर उसने पहरेदारों को

अपनी आपबीती सुनायी ।

"अगर मकानों के चबूतरों पर अजनबी लोग आश्रय लेने लगें, तो हमारा पहरेदार होना ही बेकार होजाता है। तुम जैसे लोगों के लिए सराय हैं, धर्मशाला हैं। रात के समय तो उनमें प्रवेश मिल नहीं सकता। जिन धर्मशालाओं में यात्रियों को रात-दिन किसी भी समय प्रवेश मिलता है, वे नगर के प्रवेश-द्वार के पास हैं। तुम वहीं जा-ओ।" पहरेदारों ने धनपतराय को पूरा ब्यौरा दिया।

धनपतराय ने पहरेदारों से ऐसी ही एक धर्मशाला तक पहुँचने का रास्ता मालूम किया और निकल पड़ा। पर नगर की गलियों में वह रास्ता भटक गया और थोड़ी देर इधर-उधर चक्कर काटकर अंत में एक मैदान में पहुँचा ।

धनपतराय बेहद थक चुका था। वह थोड़ी देर के लिए वहाँ आराम करना चाहता था कि तभी कहीं से कोई आ धमका और कुछ अधिकार भरी आवाज़ में बोला, "तुम कौन हो? आधीरात के समय यहाँ क्या कर रहे हो"

धनपतराय ने उसे अपना हाल सुनाया ।

उस अजनबी आदमी ने कहा, "राजा के दर्शन करने के लिए तुम इतनी मेहनत करके, इतना कष्ट उठाकर यहाँ पर आये हो। पर रात के समय यहाँ तुम्हें इस तरह चक्कर लगाते देखकर मुझे तुम पर संदेह हो रहा है कि तुम जो कुछ कह रहे हो, वह सत्य नहीं है । तुम्हारी इस गठरी में क्या है? कहीं चोरी का माल तो नहीं? खोलकर दिखाओ!"

धनपतराय ने बिना किसी संकोच के गठरी खोलकर दिखा दी। उसके अन्दर धनी लोगों के द्वारा पहने जाने योग्य मूल्यवान वस्त्रों का एक जोड़ा और चमकदार जूते थे ।

अब उस अजनबी ने धनपतराय पर तीक्ष्ण दृष्टि डाली। वह बुरी तरह फटे हाल था और भिखारी जैसा दिखाई दे रहा था ।

"ये वस्त्र और ये जूते तुम्हारे नहीं हैं। तुमने कहीं से चुराये हैं। ठीक है?" अजनबी ने कठोर स्वर में पूछा ।

"एक साल तक मैंने अपना पेट काटकर जो धन जोड़ा, उसी से मैंने इन्हें ख़रीदा है। मैंने कहीं कोई चोरी नहीं की।" धनपतराय ने दीन स्वर में उत्तर दिया ।

"तब तुमने इन्हें पहना क्यों नहीं? फटेहाल क्यों बने हो?" अजनबी ने फिर सवाल किया।

"मैंने राजा के दर्शन के समय के लिए इन्हें सुरक्षित रखा हुआ है। पहरेदार मुझे जिस क्षण भी महल के अन्दर जाने की अनुमति देंगे, मैं झट इन्हें पहनकर राजा के पास चला जाऊँगा।" धनपतराय ने सरलता से कहा।

"तुम पहले भी तो इन्हें पहन सकते थे!" अजनबी ने कुछ आश्चर्यचकित होकर कहा।

"पहले पहनने से ये मुसकर ख़राब होजायेंगे। राजदर्शन के लायक़ नहीं रहेंगे, बस इसलिए नहीं पहना।" धनपतराय ने कहा।

"तुम राजा के दर्शन करना चाहते हो, पर राजा तो तुम्हारे दर्शन नहीं करना चाहते। फिर इन क़ीमती वस्त्रों की क्या आवश्यकता थी? अवश्य ही तुम कोई बात छिपा रहे हो। मुझे बताओ, शायद मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूँ।" अजनबी ने कहा।

धनपतराय थोड़ी देर तक सिर झुकाकर मौन बना रहा, फिर बोला, "इस देश के राजा अवतार पुरुष हैं। प्रजा के कल्याण के लिए वे अनेक उपयोगी कार्य कर रहे हैं। उनके परिचय में जो भी ग़रीब आता है, उनकी मदद से खुशहाल बन जाता है। पर उन्हें मुझ जैसे अनेक गरीबों के बारे में कुछ मालूम नहीं है। मुझे इस तरह फटेहाल देखकर वे दुखी हो जाते। मैं उन्हें दुखी नहीं करना चाहता। बस, यही मेरी कामना है। इसलिए मैंने इन क़ीमती वस्त्रों का इंतजाम पेट काट कर किया है।"

"तब तो जो बात तुम छिपाना चाहते थे, वह प्रकट होगयी। तुम फटेहाल ही मेरी दृष्टि में पड़ गये। धनपतराय, मैं ही इस देश का राजा कर्णदेव हूँ।" अजनबी ने कहा।

"प्रभु, क्या आप ही इस देश के राजा हैं? मुझे अपने भाग्य पर विश्वास नहीं हो रहा है। मेरा जन्म सफल होगया। पर महाराज, आप इस आधीरात के समय पैदल क्यों फिर रहे हैं?" धनपतराय ने पूछा।

"प्रजा मेरे बारे में क्या सोचती है, इस बात का पता लगाने के लिए मैं अक्सर वेश बदलकर घूमा करता हूँ। इससे मुझे लोगों की वास्तविक दशा का ज्ञान भी हो जाता है। आज तुमसे

मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । कल महल के पहरेदार तुम्हें मेरे पास भिजवा देंगे । तुम मुझसे अवश्य मिलना । मैं तुम्हारी गरीबी दूर करने के लिए समुचित व्यवस्था करूँगा और तुम्हें उपहार भी दूँगा ।'' राजा ने कहा ।

धनपतराय मौन बना रहा । राजा कर्णदिव ने फिर कहा, ''मैंने स्वयं तुम्हारी ग़रीबी देख ली है । मगर मैं इसे मंत्रियों और दरबारियों को भी दिखाना चाहता हूँ । तुम्हारे मूल्यवान वस्त्र और जूते मैं अपने साथ लिये जा रहा हूँ ।'' यह कहकर राजा उसकी गठरी लेकर चले गये ।

दूसरे दिन राजा कर्णदिव ने दरबार में बड़ी देर तक धनपतराय का इंतजार किया, पर वह नहीं आया । पहरेदारों से तहक़ीक़ात करने पर पता लगा कि वह उस तरफ़ नहीं फटका । राजा ने अपने विशेष सैनिकों द्वारा धनपतराय को खोजकर अपने पास बुलवाया ।

धनपतराय ने अपनी सफ़ाई पेश करते हुए कहा, '' प्रभु, मैं राजधानी में आपके दर्शन करने आया था । वह कार्य संपन्न हुआ, इसलिए मुझे बड़ी खुशी हुई । मैं मेहनत करके पेट भरता हूँ । मुझे आपसे उपहारों की कामना नहीं थी । मेरे मूल्यवान वस्त्र आपके पास हैं, पर आपके दर्शनों के पश्चात मुझे उनकी जरूरत नहीं है । इसलिए मैं वे वस्त्र भी वापस नहीं चाहता । यही कारण है कि आज मैं आपके पास नहीं आया ।''

''धनपतराय, तुम्हारे व्यवहार से मैं समझ गया कि तुम्हारे अंदर तनिक भी स्वार्थ-भावना नहीं है और तुम्हारा मन भी शुद्ध है । पर तुम्हारे कारण मुझे अपने शासन की कुछ त्रुटियाँ मालूम हुईं और इस बात का पता चला कि राजधानी के पहरेदार मेरे तथा जनता के बीच कैसी दीवार खड़ी कर रहे हैं । इसलिए मैं तुम्हारा अभिनन्दन करना चाहता हूँ ।'' यह कहकर राजा कर्णदिव ने धनपतराय को अपना धंधा जमाने के लिए कुछ धनराशि और एक क़ीमती उपहार भेंट किया ।

राजा कर्णदिव ने धनपतराय की गरीबी तो दूर की ही, पर वे और अधिक उद्यमपूर्वक देश की गरीबी दूर करने के उपायों में लग गये ।

सोमनाथपुर के ज़मींदार ईश्वरवर्मा बड़े उद्यमी और कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। एक बार उन्हें अपनी कचहरी में एक कुशल गुमाश्ते की ज़रूरत महसूस हुई। उन्होंने इस पद के लिए घोषणा करवादी। समाचार मिलते ही पंद्रह युवक जमींदार के पास आ उपस्थित हुए।

ईश्वरवर्मा ने उन उम्मीदवार युवकों से कहा, "मैंने नहीं सोचा था कि इस नौकरी के लिए इतनी बड़ी संख्या में प्रत्याशी उपस्थित होंगे। इस पद के लिए मैंने एक परीक्षा रखी है। यह वास्तव में आपके भाग्य की परीक्षा होगी। आपके सामने ढकन लगे दस पात्र रखे जायेंगे। उनमें से एक पात्र के अन्दर मैंने सोने का एक सिक्का रख दिया है। आप में से जो युवक यह बता सकेगा कि सोने का सिक्का किस पात्र में है, उसे मैं नौकरी दूँगा। देखो, भाग्य किसको वरण करता है।"

कुछ ही देर में ढकन लगे दस पात्र युवकों के सामने कुछ दूर पर रख दिये गये। उनके आगे एक परदा बांध दिया गया। ज़मींदार बगल में ही एक कुर्सी पर बैठ गये। परदे के सामने उपस्थित लोग यह नहीं जान सकते थे कि कौन से पात्र को खोलकर देखा गया है। केवल ज़मींदार ही अपनी कुर्सी पर से यह सब देख सकता था।

परीक्षा अरंभ हुई। एक एक युवक क्रमशः उस परदे के पीछे जाता, पात्र चुनकर उसका ढकन खोलकर देखता और निराश होकर वापस आजाता। पंद्रह युवकों में से चौदह युवक ख़ाली हाथ वापस लौट आये। उन्हें सोने का सिक्का नहीं मिला।

इन युवकों में से पंद्रहवाँ युवक रामरतन दूर खड़ा यह नज़ारा देख रहा था। वह नौकरी के लिए बड़ी आशा लेकर आया था।

ईश्वरवर्मा ने उसकी ओर तीव्र दृष्टि डाली और कहा, "तुम भी नौकरी पाने की आशा से आये

सरला गुप्ता

हुए हो न? तुम भी अपना भाग्य आजमालो।"

रामरतन बोला, "ज़मींदार साहब, इन घड़ों में से किसी एक में सोने का सिक्का रखकर आप पंद्रह में से चौदह युवकों को भाग्यहीन प्रमाणित करना चाहते हैं। मैंने आपके बारे में सुना है कि आप कर्म और श्रम को ऊँचा दरजा देनेवाले इन्सान हैं। आप भाग्य परीक्षा करके गुमाश्ते की नियुक्ति करना चाहते हैं, यह बात मेरी बिलकुल समझ में नहीं आती।"

यह उत्तर सुनकर ज़मींदार ईश्वरवर्मा ने मुस्कराकर रामरतन से पूछा, "तो क्या तुम समझते हो कि मैंने भाग्य की यह परीक्षा केवल मनोरंजन के लिए रखी है?"

"ज़मींदार साहब, मेरा यह विचार नहीं है। शायद इसमें भी आपने उम्मीदवारों की बुद्धिमत्ता तथा मानसिक परिपक्वता की परीक्षा का कोई प्रबन्ध अवश्य किया होगा। मेरे विचार से इन घड़ों में से किसी में भी सोने का सिक्का नहीं है। इसलिए मैं इस विश्वास से आया हूँ कि आप कोई काम दें तो मैं उसमें सफल होने का प्रयत्न करूँ। पर मैं केवल क़िस्मत पर भरोसा करके नौकरी नहीं पाना चाहता।" रामरतन ने उत्तर दिया।

"इसका मतलब है कि तुम इन घड़ों में से सिक्का निकालने की कोशिश भी नहीं करना चाहते हो न?" ज़मींदार ने पूछा।

"आप मुझे क्षमा करें! मैं यह काम नहीं कर सकूँगा।" रामरतन ने स्पष्ट जवाब दे दिया।

यह उत्तर सुनकर ज़मींदार प्रसन्न होकर बोला, "तुम्हारा सोच-विचार और व्यवहार मुझे पसन्द आया। तुम्हारी बात सच है-इनमें से किसी भी पात्र के अन्दर सोने का सिक्का नहीं है। यह परीक्षा वास्तव में भाग्य की परीक्षा नहीं, बल्कि बुद्धि की परीक्षा थी। मैं यही चाहता था था कि केवल भाग्य पर भरोसा न रख अपने बुद्धि-बल और कर्म पर भरोसा करनेवाला तुम जैसा कोई व्यक्ति निकल आये तो मैं उसे अपना गुमाश्ता बना लूँ।"

रामरतन ज़मींदार ईश्वरवर्मा की कचहरी में गुमाश्ता बन गया। अपनी क़िस्मत आजमाने के लिए आये हुए शेष चौदह युवक निराश होकर वापस लौट गये।

दवा का असर

मंगलनाथ और गौरी नव दंपति थे। उन्होंने गाँव के छोर पर एक खपरैलवाला मकान किराये पर लिया और अपनी गृहस्थी आरंभ की। एक अर्थ में उन दोनों की राम मिलायी जोड़ी थी। उनकी नींद बड़ी विलक्षण थी। रात को जब वे सोते तो सुबह सूरज के खूब ऊपर आ जाने के बाद ही उठते। उनका खेती का काम पिछड़ता जा रहा था।

एक दिन मंगलनाथ अपने और अपनी पत्नी के इस स्वभाव से तंग हो उठा। उसने सारा किस्सा अपने दोस्त रंगनाथ को सुनाया। उसने उसे रोशनलाल वैद्य के पास भेज दिया।

वैद्य ने मंगलनाथ से सारा हाल सुनकर कहा, "बस, यही परेशानी है न?" और हँस कर उसके लिए दवा बांध दी। फिर कहा, "ये गोलियाँ तुम दोनों पति-पत्नी खा लेना। सूर्योदय के पहले इस तरह उठ बैठोगे, मानो किसी ने तुम्हारी पीठ पर थपकी लगायी है।"

उसी रात मंगलनाथ और गौरी ने रोशनलाल वैद्य की दी हुई दवा का सेवन किया और सो गये। जब उनकी आँखों खुलीं तो देखते क्या हैं, अभी सूर्योदय भी नहीं हुआ है। वे थकान तो अनुभव कर रहे थे, पर तड़के उठने की बात पर अत्यन्त प्रसन्न थे। मंगलनाथ रंगनाथ को दवा के बारे में बताने के लिए घर से निकल पड़ा।

रंगनाथ उसे रास्ते में ही मिल गया। मंगलनाथ अभी कुछ बोला भी नहीं था कि रंगनाथ ने पूछा, "दोस्त, इधर तुम तीन दिन से दिखाई नहीं दिये, क्या तुम गाँव से बाहर तो कहीं नहीं चले गये थे।"

मंगलनाथ हक्का-बक्का रह गया। अब उसकी समझ में आया कि दवा के असर के कारण आज वह तीसरे दिन नींद से उठा है। उसने बिना दवा के ही अब अपने सुधार का निश्चय किया।
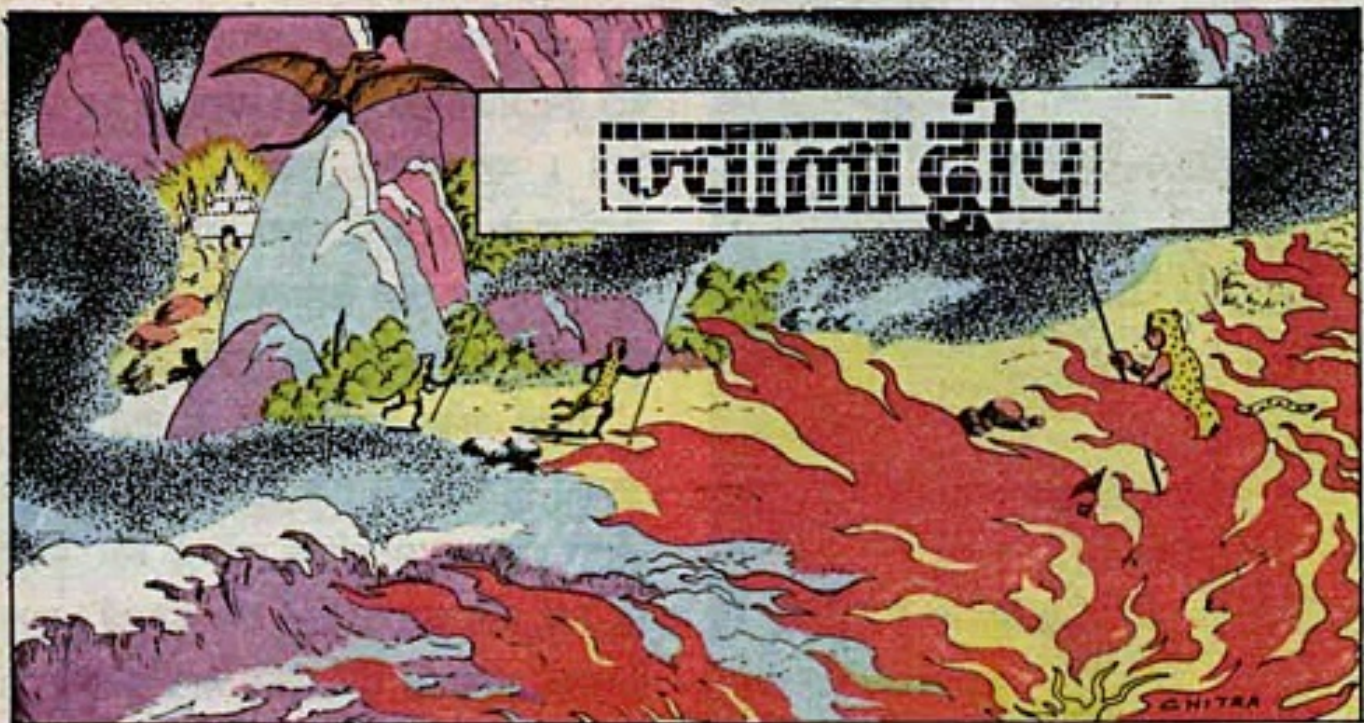
[१६]

[उग्रदत्त तथा उसके मित्र रुद्र और अरुद्र को लेकर बाघचर्मधारी भयंकर पक्षियों पर सवार हो ज्वालाद्वीप के लिए निकल पड़े। आकाश में उनके प्रतिद्वन्दी भल्लूकचर्मधारियों ने उनका सामना किया। उग्रदत्त वाला भयंकर पक्षी एक पहाड़ पर उतरा। बाघचर्मधारी उसे उसके हाल पर छोड़ चले गये। इसके बाद कुछ भल्लूकचर्मधारी उग्रदत्त को साथ लेकर एक गुप्त सुरंग से चल पड़े। आगे पढ़िये !...]

भल्लूकचर्मधारियों ने ज्यों ही सुरंग-द्वार को बन्द किया, त्यों ही सुरंग के अन्दर गहरा अंधकार छा गया। इस अधकार में ही उग्रदत्त ने आगे कदम बढ़ाया। पैर फिसल जाने के कारण वह गिरने को हुआ, लेकिन एक भल्लूकचर्मधारी ने उसका कंधा पकड़कर उसे थाम लिया और समझाया, "जल्दीबाजी से दुर्घटना हो सकती है। हम बीस सीढ़ियाँ उतरने के बाद ही सुरंग के तल तक पहुँच सकते हैं। इसलिए जल्दी न करके धीरज से ही काम लो। देखो, यह प्रकाश हमें रास्ता दिखायेगा।" यह कहकर उसने अपने चर्म-वस्त्रों के नीचे से धक-धक चमक रही एक मणि को निकाला। उसके साथियों ने भी अपनी चमकती मणियाँ निकाल लीं और सब सीढ़ियाँ उतरने लगे।

भल्लूकचर्मधारियों के हाथों में अद्भुत प्रकाश फैंनेवाली इन मणियों को देखकर उग्रदत्त विस्मित हो उठा। शायद इनके पास अन्धेरे में

रास्ता दिखानेवाले दीप-स्तंभ, मोमबत्तियों आदि नहीं हैं, इसीलिए ये इन अमूल्य मणियों को प्रकाश के लिए काम में लाते हैं। पर मणियों को दीपक बनानेवाले लोग साधारण नहीं हो सकते। उग्रदत्त के अन्दर अनेक विचार चल रहे थे।

उग्रदत्त ने अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए उन लोगों से पूछा, "क्या इस द्वीप में तेल नहीं मिलता? रोशनी के लिए इन मणियों को छोड़कर क्या आपके पास कोई दूसरा साधन नहीं है?"

"तेल? वह क्या चीज़ होती है? हाँ-हाँ, यहाँ पर गुलामों के रूप में आये हुए तुम्हारे देशवासियों के मुँह से हमने यह नाम सुना है।" एक भल्लूकचर्मधारी ने कहा।

उग्रदत्त अपने मन में इस विचित्र द्वीप के बारे में सोचने लगा। उसे बाघचर्मधारियों के हाथों में बंदी बने अपने मित्र रुद्र और अरुद्र की याद आने लगी। वह सामन्त राजा सुदर्शन की पुत्री चंद्रलेखा के बारे में भी सोचने लगा। राजकुमारी के साथ वे दुष्ट लोग कैसा बर्ताव कर रहे होंगे? पता नहीं, राजकुमारी की कैसी दशा होगी?

उग्रदत्त अनेक सोच-विचारों के बीच डूबता-उतराता सुरंग के तल तक पहुँच गया। सुरंग की चौड़ाई एक गज़ से अधिक नहीं थी और ऊँचाई भी कहीं पाँच फुट तो कहीं दस फुट थी। कुल मिलाकर सुरंग को एक संकरा मार्ग ही कहा जा सकता था।

"यह सुरंग कहाँ तक जाती है? कहीं तुम लोग मुझे गुलाम के रूप में बेचने के लिए तो नहीं ले जा रहे? कहीं तुमने मुझे इसीलिए तो बाघचर्मधारियों के हाथों से नहीं बचाया?" उग्रदत्त ने उद्विग्न होकर पूछा। वह अभी तक समझ नहीं सका था कि भल्लूकचर्मधारियों को मित्र समझे या शत्रु।

उग्रदत्त के प्रश्न पर एक भल्लूकचर्मधारी हँस पड़ा। दूसरे ने क्रुद्ध होकर डाट बतायी। तीसरे ने उग्रदत्त की तरफ़ तीक्ष्ण दृष्टि डालकर कहा, "अगर तुम्हें गुलाम बनाने के लिए ले जाना होता तो तुम्हारी आँखों पर पट्टी बंधी होती, ताकि तुम इस सुरंग-मार्ग से परिचित न हो सको। हम लोग मनुष्यों को गुलामों के रूप में काम में नहीं लाते। फिर भी, सभी मानवों पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता। पांचों उंगलियाँ बराबर तो होती नहीं।

कोई एक विश्वास पात्र है तो दूसरा धोखेबाज। तुम्हारे देश के ही कुछ लोग गुलामों को पकड़ लाने में बाघचर्मधारियों के नेता एकपाद की सहायता कर रहे हैं। क्या तुम नागवर्मा को जानते हो?"

"हाँ, हाँ, नागवर्मा को मैं जानता हूँ। उसके बारे में मैंने बहुत सुन रखा है ..." उग्रदत्त की बात पूरी होने के पहले ही दूसरा भल्लूकचर्मधारी पहलेवाले को डपटकर बोला, "तुम बहुत अधिक बकवास करते हो। कभी चुप रहना सीखोगे अथवा नहीं। क्या तुम हमारे नेता की चेतावनी भूल गये?"

इतना सुनते ही पहला भल्लूकचर्मधारी एकदम चुप होगया। अब सब चुपचाप चलने लगे। उग्रदत्त समझ गया कि इन लोगों को इनके नेता का क्या निर्देश है! किसी भी रहस्य का अद्‌घाटन नहीं करना है। यहाँ तक कि किसी का नाम भी नहीं बताना है। उग्रदत्त आगे की घटना की प्रतीक्षा करने लगा।

सबसे आगे दो भल्लूकचर्मधारी अपनी हथेलियों पर प्रकाशमणि रखकर चल रहे थे। उनके पीछे उग्रदत्त था और उग्रदत्त के पीछे एक और भल्लूकचर्मधारी था। कुछ मिनटों तक सुरंग में चुपचाप चलने के बाद अचानक ऐसा लगा कि अब सामने सुरंग बंद होगयी है। सामने आड़े ढंग से एक विशाल शिला पड़ी हुई थी। आगे जारहे भल्लूकचर्मधारी ने शिला में बने एक गहरे स्थान को अपनी तर्जनी से दबाया। शिला

थोड़ी-सी खिसक गयी। दूसरे ही क्षण शिला के पीछे से एक शब्द सुनाई दिया—'शरभम्'। इसके उत्तर में भल्लूकचर्मधारी ने कहा—'भल्लूकम्'। यह उत्तर सुनकर शिला का कपाट थोड़ा और खुल गया। भल्लूकचर्मधारी एक भट ने शिला-कपाट के उस ओर से झाँककर देखा। वह हाथ में भारी तलवार धारण किये हुए था।

उग्रदत्त समझ गया कि 'शरभम्' एवं 'भल्लूकम्' उस रात के लिए भल्लूकचर्मधारियों द्वारा निश्चित किये गये संकेत-शब्द थे। उग्रदत्त को यह भी लगा कि भल्लूकचर्मधारी बाघचर्मधारियों की तरह क्रूर और अत्याचारी नहीं हैं और अपने इन दुश्मनों के कारण चौबीसों घंटे इन्हें शंकित और सावधान रहना पड़ता है। इन

काफ़ी दूर तक चला था, फिर भी उसे सुरंग का कोई अंत नज़र नहीं आरहा था। उसे ऐसी शंका हुई कि ऊपर छिद्रों में से भी रोशनी आ रही है और सुरंग की दीवारों के पीछे कोई लोग बात कर रहे हैं। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि संभवतः भल्लूकचर्मधारियों का नेता कंध बाघचर्मधारियों के निरन्तर हमलों से डरकर ही ऐसे गुप्त स्थान पर अपना समय काट रहा है। छिपकर रहना भी कितना बड़ा अभिशाप है!

आगे जारहा भल्लूकचर्मधारी अचानक रुक गया। उसने हथेली पर रखी मणि को मुट्ठी में कस लिया और उसे फर्श की तरफ़ नीचे की ओर तीन बार हिलाया। दूसरे ही क्षण ऐसी ध्वनि हुई, मानो पृथ्वी फटने जारही हो। देखते ही देखते भल्लूकचर्मधारी के पैरों के पास धरती में दरारें पड़ गयीं और उनके भीतर से आँखों को चौंधियानेवाली रोशनी फूट निकली।

"यहाँ पर इक्कीस सीढ़ियाँ है, ख़बरदार! पैर न फिसल जाये ..." इसप्रकार सावधान कर भल्लूकचर्मधारी सीढ़ियाँ उतरने लगा।

यह चेतावनी सुनकर उग्रदत्त सावधान होगया और संभलकर सीढ़ियां उतरने लगा।

सुरंग के मध्य एक बड़ी भारी ख़ाई थी जिसमें से दिन की भाँति प्रकाश फूट रहा था।

उग्रदत्त तथा उसके साथ चल रहे भल्लूकचर्मधारी सीढ़ियां उतरकर समतल स्थल पर पहुँचे। वहाँ चारों तरफ़ दीवारों में मणियाँ जड़ी हुई थीं, जिनसे अद्भुत प्रकाश निकल रहा था। सामने

बाघचर्मधारियों ने सारे प्रदेश में आतंक मचा रखा है और सबके दुश्मन बन गये हैं।

"क्या एक ही आदमी तुम्हारे हाथ लगा? बाकी लोगों का क्या हुआ?" उस तरफ़ के संतरी ने पूछा।

"उनके बारे में हम कुछ नहीं जानते। लेकिन, तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो? चमगादड़ की तरह सदा सुरंग से चिपके रहनेवाले तुम्हें इन सब बातों से क्या मतलब है? तुम्हें अपना यह छानबीन करने का स्वभाव छोड़ देना चाहिए।" यह कहकर आगेंवाले भल्लूकचर्मधारी ने शिला-कपाट पूरा खोल दिया और आगे बढ़ा।

उसके पीछे बाक़ी लोग भी आगे बढ़े।

उग्रदत्त भल्लूकचर्मधारियों के पीछे सुरंग में

भल्लूकचर्मधारी तुरन्त उग्रदत्त के पास आया और बोला, "ये हमारे नेता कन्ध हैं। इन्होंने आदेश दिया है कि मैं तुम्हें इनके पास ले जाऊँ।"

उग्रदत्त निर्भय भाव से कन्ध के सामने जाकर खड़ा होगया। उसे विश्वास था कि उस पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया जायेगा।

कन्ध ने उसकी तरफ़ तीक्ष्ण दृष्टि से देखकर कहा, "तुम्हारे कितने साथी थे? बाघचर्मधारियों ने तुम कितने लोगों को अपहृत किया था?"

"कुल चार लोगों का अपहरण हुआ है, जिनमें एक स्त्री है।" उग्रदत्त ने जवाब दिया।

"तुम्हें कुछ पता है कि वे लोग इस समय कहाँ पर हैं?" कन्ध ने पूछा।

"मुझे कुछ पता नहीं है।" उग्रदत्त को समझ नहीं आरहा था कि भल्लूकचर्मधारियों का नेता एक अपहृत व्यक्ति से ये सब सवाल क्यों पूछ रहा है? कहीं इसके पीछे कोई रहस्य तो नहीं है? क्या वह नहीं जानता कि वह बड़ी बुरी दशा से निकलकर उसके सामने आया है और वह किसी भी घटना का ब्यौरा देने में असमर्थ है।

उग्रदत्त उसके बारे में कुछ सोच-विचार कर रहा है, यह समझकर कन्ध हँस पड़ा और बोला, "मैं तुम लोगों का मित्र हूँ। तुम्हारे देश से मनुष्यों का जो अपहरण होता है, उसमें मेरा कोई हाथ नहीं है। बाघचर्मधारी जैसे तुम्हारे शत्रु हैं, वैसे ही हमारे भी। तुमने स्वयं देखा है कि पहाड़ी गुफ़ाओं तथा सुरंगों के अन्दर मुझे किसी प्रकार से गुप्त रहकर अपना समय काटना पड़ रहा है। तुम्हारे

की तरफ़ एक ऊँचा द्वार था। उसके कपाट बंद थे। उग्रदत्त को सब कुछ बड़ा रहस्यमय लग रहा था। उग्रदत्त के साथ आये भल्लूकचर्मधारियों में से एक उस द्वार के निकट पहुँचा। उसने कपाट पर मुट्ठी से तीन बार ठक-ठक की। कपाट तुरन्त खुल गये। सामने ऊँचे आसन पर एक दृढ़काय व्यक्ति बैठा हुआ था। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली था और उसके माथे पर संकल्प की रेखाएं थीं। उसके शिरस्त्राण में भालू के कान लगे हुए थे, जो संभवतः उसके नेता होने का चिन्ह थे।

भल्लूकचर्मधारी आसन पर बैठे उस व्यक्ति के निकट गया और मंद स्वर में कुछ बोला। आसनस्थ व्यक्ति ने उग्रदत्त की ओर देखकर सिर हिलाया और भल्लूकचर्मधारी से कुछ कहा।

देश के लिए ही नहीं बल्कि ज्वालाद्वीप के लिए भी महामारी बने एकपाद तथा उसके अनुचरों का सर्वनाश करने के लिए मैंने तुम्हारे देश के ही एक व्यक्ति के साथ मिलकर एक योजना बनायी है। शायद उस व्यक्ति को तुम पहचानते हो ! मैं उसे अभी बुलवाता हूँ।" यह कहकर कन्ध ने अपने एक अनुचर को इशारा किया ।

कन्ध के अुनचर ने अपने नेता के आसन के पीछे स्थित एक कपाट को खोला। दूसरे ही क्षण मुस्कराता हुआ रुद्र बाहर निकला और उग्रदत्त के पास आकर प्रेम से बोला, "उग्रदत्त ! मैंने तुम्हें जीवित देखने की सारी आशाएँ त्याग दी थीं। तुम मेरे सामने खड़े हो, मैं कितना खुश हूँ!"

"मेरे मित्र रुद्र!" कहकर उग्रदत्त परमानन्दित हो उठा। उसे भी उम्मीद नहीं थी कि वह इतनी आसानी से अपने एक मित्र को देख सकेगा। फिर उसने बड़ी आतुरता से पूछा, "अरुद्र कहाँ है? राजकुमारी चंद्रलेखा का क्या हाल है ?"

"वे दोनों बाघचर्मधारियों के अधीन हैं। मुझे कन्ध के अनुचरों ने बचाया है।" रुद्र के स्वर में आशा—निराशा का मिश्रण था ।

कन्ध उठ खड़ा हुआ, फिर उग्रदत्त से बोला, "मैंने रुद्र के मुँह से तुम्हारे बारे में सारी बातें जान ली हैं। मुझे इतने समय बाद एकपाद तथा उसके अनुचरों का सर्वनाश करने का अवसर प्राप्त हुआ है। हम लोग अवश्य ही सफलता का मुँह देखेंगे। मैंने तथा तुम्हारे मित्र रुद्र ने मिलकर जो योजना बनायी है, इस समय उसकी चर्चा

आवश्यक नहीं है। पर मुख्य बात यह है कि हमें तुम्हारे पालक पिता उग्राक्ष और उनके सेवकों को इस द्वीप में लाकर उनकी मदद से एकपाद के दुर्ग पर डेरा डालना है ।"

"क्या आपके अपने भयंकर पक्षी राक्षसों को ढोकर यहाँ ला सकते हैं?" उग्रदत्त ने पूछा ।

"ऐसे महाकाय व्यक्तियों को ढोने की शक्ति उनमें नहीं है। अगर ऐसा हो सकता, तब तो कहना ही क्या था! तुम्हारे सभी बन्धु-बान्धवों को नावों के द्वारा यहाँ लाना होगा।" कन्ध ने कहा।

"मुझे जब बंदी बनाकर इस द्वीप में लाया जा रहा था, उस समय मैंने देखा था कि इसके चारों तरफ़ अग्निपर्वत समुद्र-तटों तक फैले हुए हैं। मुझे ऐसा दिखाई दिया कि अग्निपर्वतों से निकलनेवाला लावा समुद्रतटवर्ती प्रदेशों को

शोलों से भर रहा है। मैं नहीं समझ सकता कि लावायुक्त इन प्रदेशों में नावों को किनारों तक लाया जा सकता है।" उग्रदत्त ने अपनी शंका व्यक्त की।

उग्रदत्त की बात सुनकर कन्ध हँस पड़ा। उसने कहा, "मेरे अनुचरों को कुछ ऐसे प्रदेशों का ज्ञान है, जहाँ नावें आग के शोलों से बचकर किनारे लग सकती हैं। ये लोग समुद्र-मार्गों से भी बहुत भलीभाँति परिचित हैं। राक्षसों को यहाँ तक पहुँचा देने में हमें विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। किन्तु वास्तविक कठिनाई तो एकपाद के दुर्ग को घेरने के समय सामने आयेगी। इसके अलावा अगली समस्या उसके संहार की है। बन्दी होने के बाद भी उसे मारना बड़ा जोख़िम का काम है।"

कन्ध की कुछ बातें तो उग्रदत्त की समझ में आगयीं, पर वह एकपाद को लेकर कन्ध के अन्तर्द्वन्द को नहीं समझ सका। बन्दी होने पर भी एकपाद कैसे ख़तरनाक हो सकता है—उग्रदत्त कुछ समझ नहीं सका, वह प्रतीक्षा कर रहा था कि कन्ध स्वयं ही सब स्पष्ट कर देगा।

उग्रदत्त की उलझन देखकर कन्ध उसे एक गुप्त सुरंग-मार्ग से पहाड़ के ऊपर ले गया और बोला, "देखो, उन शोलों के बीच स्थित वह एकपाद का दुर्ग है। यहाँ से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह दुर्ग शोलों के बीच स्थित है, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। उसके चारों तरफ़ अग्नि-पर्वत नहीं हैं। वहाँ तक पहुँचने के लिए एक सुरक्षित मार्ग है। अगर हमारे पास पर्याप्त बल होगा तो हम उसके दुर्ग पर कब्ज़ा भी कर सकते हैं, पर हमारी वास्तविक कठिनाई यह नहीं है। असली कठिनाई एकपाद का वध करने में है। बस वही सबसे बड़ी समस्या है।

"यदि एकपाद हमारे हाथ में आ जाता है तो उसका वध करने में क्या बाधा हो सकती है?" उग्रदत्त ने पूछा।

"उसके पास एक अद्भुत शक्ति है। वह यह कि अगर एकपाद किसी का खून देख ले, या उसका खून किसी की दृष्टि में आजाये तो वह मनुष्य निश्चय ही मर जायेगा।" कन्ध ने कहा।

(क्रमशः)

सेवक की सलाह

दृढ़व्रती विक्रमार्क वृक्ष के पास लौट आये। वृक्ष पर से शव उतार उसे कंधे पर डाला और सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगे। तब शव में वास करनेवाले बेताल ने पूछा, "राजन, इस श्मशान में अर्धरात्रि के समय भूत-प्रेत एवं सियार घूमते हैं। आप ऐसे भयानक स्थान में जो श्रम उठा रहे हैं, उसे देख मुझे आपके प्रति सहानुभूति होती है। मेधावी व्यक्तियों का व्यवहार कई बार बड़ा विचित्र होता है। वे इस विश्व-चक्र को समझते हुए अत्यन्त साधारण बने रहना ही उचित समझते हैं। फिर भी जब दूसरों के समक्ष कोई समस्या उत्पन्न होती है, तब वे मौन या निष्क्रिय नहीं रहते। इस कारण उन्हें कठिनाई भी उठानी पड़ती है। इसके उदाहरण के रूप में मैं आपको एक ऐसे मेधावी सेवक की कहानी सुनाता हूँ जो अपने गुण के कारण ही राजाश्रय से वंचित हो जाता है। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल कथा

बेताल कहानी सुनाने लगाः

चंद्रशिला नगरी के राजा विक्रमदेव अभी नये ही राजा बने थे। उनकी सेवा में सुचरित नाम का एक युवक रहता था। सुचरित बड़ा चुस्त, फुर्तीला और कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति था। उसके अन्दर हर समस्या को विभिन्न कोणों से देखने-समझने की क्षमता थी। पर राजा विक्रमदेव सुचरित को केवल एक साधारण सेवक ही समझते थे। वे उसकी प्रतिभा का कभी अंदाज़ नहीं लगा पाये। सुचरित ने भी कभी राजा के समक्ष अपनी बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करने का प्रयत्न नहीं किया। एक दिन राजा विक्रमदेव किसी समस्या को लेकर गहरे सोच में पड़े हुए थे। उसी समय सुचरित उन्हें अंगूर-रस का पेय देने के लिए आया। उसने भाँप लिया कि राजा किसी गंभीर समस्या के कारण परेशान हैं। उसने बड़ी विनम्रता से राजा से पूछा, "महाराज, ऐसा प्रतीत होता है कि आप किसी समस्या को लेकर गहरे सोच में मग्न हैं!"

राजा विक्रमदेव सेवक का यह सवाल सुनकर मुस्कराकर बोले, "मैं राजा होकर भी जिस समस्या का हल नहीं ढूंढ़ पा रहा हूँ, उसे तुम्हें क्या बताऊँ? फिर भी सुना देता हूँ। हमारे राज्य में वीरभद्र नाम के एक डाकू का आतंक बढ़ता जा रहा है। उसके कुकृत्यों से जनता परेशान है। वह दिन-दहाड़े लोगों को लूट लेता है, मार डालता है। उसे पकड़ने के हमने अनेक प्रयत्न किये, पर सफलता नहीं मिली। जनता मुझ पर यह आरोप लगा रही है कि मैं उसकी सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध नहीं कर पा रहा हूँ। बताओ, अगर तुम राजा होते तो इस समस्या का क्या हल करते?"

सुचरित ने कुछ क्षण सोचकर कहा, "महाराज, यदि मैं राजा होता तो इस समस्या का हल इस प्रकार करता— मैं नगर के समीप के मैदान में कुछ मज़दूरों से खुदाई का काम आरंभ करवा देता और जनता में इस बात का प्रचार करवा देता कि उस स्थान पर पृथ्वी के गर्भ में एक पुराने शिवालय का खंडहर है और उस शिवालय में नन्दी की स्वर्ण प्रतिमा के होने का पता चला है। उस प्रतिमा के लिए ही यह खुदाई कार्य चल रहा है। यह समाचार अवश्य ही डाकू वीरभद्र के कानों तक भी पहुँचेगा। वह इस स्वर्ण प्रतिमा को

हथियाने के लिए निश्चय ही एक मज़दूर का छद्मवेश बनाकर आयेगा। वीरभद्र को एक नये व्यक्ति के रूप में कोई भी सैनिक पहचान लेगा। इस प्रकार उसे बन्दी बना लेना कोई मुश्किल काम नहीं होगा।''

सुचरित के मुँह से यह सारी योजना सुनकर राजा विक्रमदेव उसकी विचार-शक्ति पर चकित रह गये। राजा ने सुचरित की योजना को कार्य का रूप दिया और डाकू वीरभद्र को बड़ी आसानी से पकड़कर कारागार में डाल दिया।

थोड़े दिन बाद राजा विक्रमदेव के सामने एक और समस्या आयी। पड़ोसी राजा भूपतिसिंह ने राजा विक्रमदेव पर आक्रमण की घोषणा की। चंद्रशिला राज्य पड़ोसी राज्य भरतपुर की तुलना में कम शक्तिशाली था। युद्ध छिड़ जाने पर चंद्रशिला की हार निश्चित थी। राजा विक्रमदेव गंभीर सोच में डूबे हुए थे। वे इस समस्या के बारे में जितना अधिक विचार करते, वह और भी जटिल हो जाती। तभी उनकी दृष्टि राजोद्यान में पौधों को पानी लगा रहे सुचरित पर पड़ी।

राजा विक्रमदेव ने सुचरित को बुलाकर सारी समस्या उसके सामने रखी। फिर पूछा, ''सुचरित, यदि तुम राजा होते तो इस समस्या का समाधान कैसे करते ?''

सुचरित ने कुछ क्षण मौन रहकर कहा, ''महाराज, भरतपुर के राजा भूपतिसिंह ने हम पर हठात् चढ़ाई नहीं की है, बल्कि अपनी शक्ति के मद में आकर युद्ध की पूर्व-घोषणा की है। यह हमारे लिए बड़ा अच्छा हुआ है। भूपतिसिंह की भारी सेना को हमारी सीमा में आने के लिए मार्ग
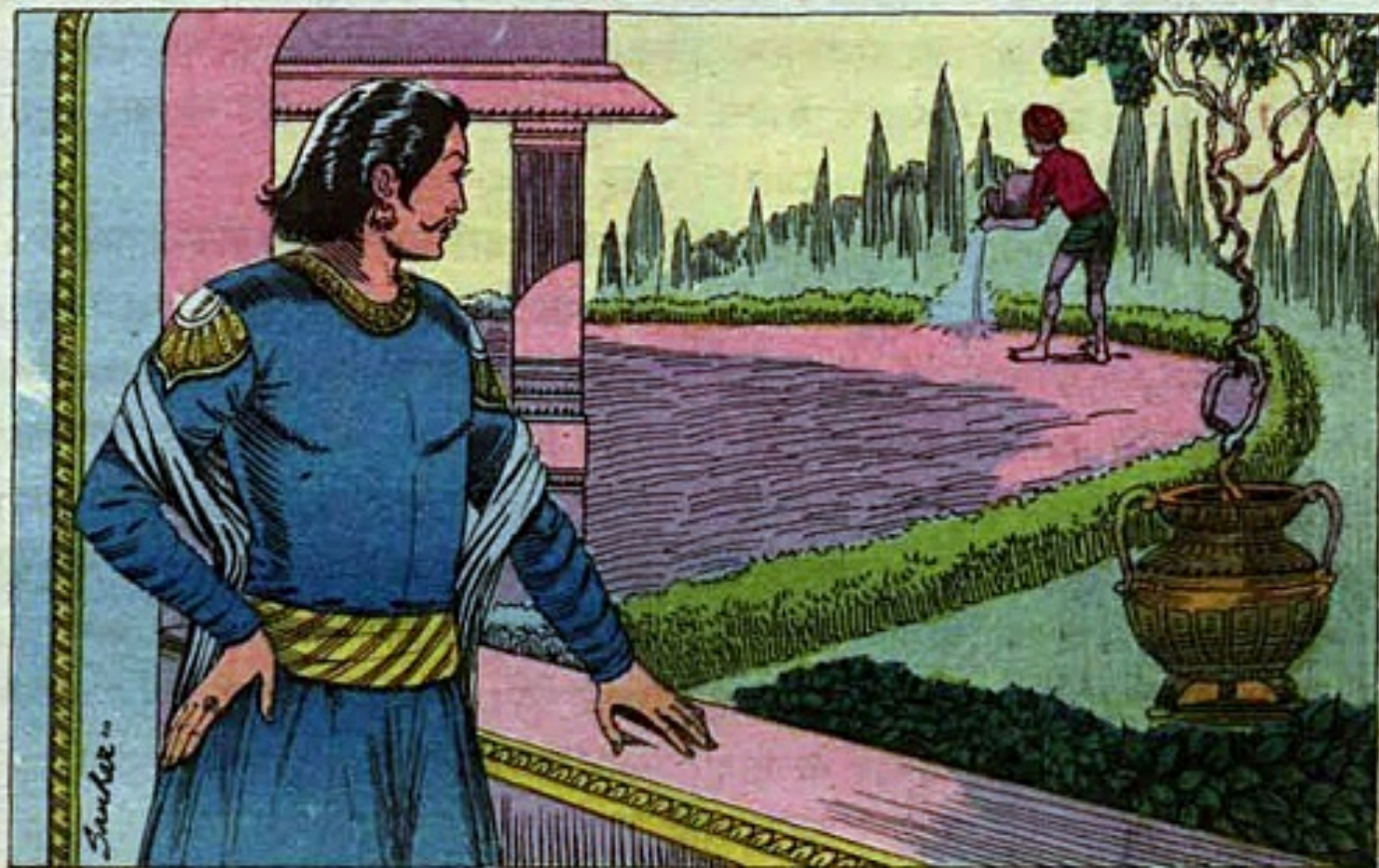
की संकरी घाटी से गुज़रना होगा। आप अपने सैनिकों को उस संकरी घाटी के दोनों ओर तैनात कर दीजिए और हमारी सीमा में स्थित घाटी के मुखद्वार के पास घुड़सवारों को पहरे पर नियुक्त कर दीजिए। शत्रु-सेना के घाटी में प्रवेश करते ही उन पर भारी चट्टानों की मार की जायेगी। इससे शत्रुसेना की काफ़ी हानि होगी। जो बच जायेंगे, वे तितर-बितर होकर भागने की कोशिश करेंगे। तब आपके सैनिक उन पर बाण-वर्षा करें। फिर भी अगर कुछ सैनिक दुस्साहस दिखाकर आगे आते हैं तो घाटी के मुखद्वार पर तैनात अश्वारोही सैनिक उनका वध करें !"

राजा विक्रमदेव इस बार भी सुचरित की बुद्धिमत्ता की दाद दिये बिना नहीं रह सके। उन्होंने सुचरित की योजना के अनुसार ही भरतपुर राज्य से टक्कर ली और उसकी सेना को पछाड़ कर भगा दिया।

इन घटनाओं से सुचरित की मेधा शक्ति पर राजा विक्रमदेव का विश्वास जम गया। उन्होंने सुचरित से कहा, 'सुचरित, तुम साधारण सेवक-पद पर रहने लायक़ नहीं हो। मैं तुम्हें अपना प्रमुख सलाहकार बनाना चाहता हूँ। तुम्हारा क्या विचार है ?"

"महाराज, पद मनुष्य की जिम्मेदारी को बढ़ा देता है। जिम्मेदारी स्वतंत्र सोच-विचार में बाधा डालती है। पद पर आजाने के बाद मैं स्वेच्छा-पूर्वक सोचने की क्षमता खो बैठूँगा। इसके अलावा, यदि जनता को यह मालूम होगया कि आप मेरी सलाहों पर शासन चला रहे हैं, तो जनता की दृष्टि में आपका उतना आदर-मान नहीं रहेगा। इसलिए आप मुझे साधारण सेवक ही बना रहने दीजिए!" सुचरित ने नम्र स्वर में कहा।

राजा विक्रमदेव को सुचरित की बातें सत्य प्रतीत हुईं।

कुछ वर्ष इसी प्रकार व्यतीत होगये। तभी एक आकस्मिक विपदा उठ खड़ी हुई। विध्वंसक नाम का एक राक्षस चंद्रशिला राज्य के निकटवर्ती अरण्य में बस गया और उधर से गुज़रनेवाले यात्रियों के लिए आतंक बन गया। वह चाहे जिसको अपना ग्रास बनाने लगा। राजा ने गुप्तचरों के द्वारा इस विषय में पूरी जानकारी हासिल की। गुप्तचरों ने बताया कि वह राक्षस अत्यन्त बलशाली है।

राजा विक्रमदेव ने फिर सुचरित को बुलवा भेजा और सारा हाल सुनाकर पूछा, "सुचरित, अब तुम्हीं बताओ, मैं राज्य को इस विपदा से कैसे मुक्त करूँ?"

"महाराज, हम विध्वंसक को बल से नहीं, युक्ति से ही जीत सकते हैं।" यह कहकर सुचरित ने राजा को अपनी योजना बतायी ।

राजा विक्रमदेव को सुचरित की योजना अद्‌भुत प्रतीत हुई। राजा उस योजना के अनुसार उसी दिन रथ पर सवार होकर विध्वंसक से मिलने चंद्रशिला के समीपवर्ती अरण्य में गये।

राजा को देखते ही विध्वंसक हुंकार कर बोला, "तुम्हारा यह कैसा दुस्साहस है ? मेरे सामने आने की हिम्मत दिखाते हो? तुम कौन हो?"

"विध्वंसक! मैं इस देश का राजा विक्रमदेव हूँ। मैं तुमसे कुछ कहने आया हूँ। अरण्य में जो भी मानवप्राणी तुम्हारे हाथ लगता है, तुम उसे पकड़कर खा जाते हो । इस कारण जनता भयभीत हो उठी है और तुम्हें कोसती है। कल से मैं स्वयं चार हृष्टपुष्ट मनुष्यों को तुम्हारे आहार के लिए भेजा करूँगा । शर्त यही है कि फिर तुम किसी और को त्रास नहीं दोगे।" राजा ने कहा।

विध्वंसक ने राजा की शर्त स्वीकार कर ली। इसके बाद राजा ने उससे अत्यन्त नम्र शब्दों में कहा, "विध्वंसक, तुम अत्यन्त बलशाली हो। मैं तुमसे एक छोटी-सी सहायता चाहता हूँ। यहाँ से पास ही एक गहरा और विशाल सरोवर है। कुछ दिन पहले डाकुओं ने मेरे राजमहल में प्रवेश करके हमारे कुल की आराध्यादेवी की स्वर्णप्रतिमा

को चुरा लिया। मेरे सैनिकों ने उनका पीछा किया। उन्होंने डाकुओं को तो पकड़ लिया, लेकिन उन्हें प्रतिमा नहीं मिल सकी। उसे डाकुओं ने सरोवर में फेंक दिया। प्रतिमा तब से सरोवर में ही पड़ी हुई है। कोई भी मनुष्य उस सरोवर में उतरने की हिम्मत नहीं करता। तुम तो परम वीर हो! तुम मुझे उस सरोवर में से वह प्रतिमा ला दो!"

विध्वंसक गर्व से फूल उठा और ताल ठोंक कर बोला, "अरे, यह तो मामूली-सा काम है। तुम मुझे सरोवर का रास्ता दिखाओ!"

इसके बाद राजा विक्रमदेव और राक्षस विध्वंसक सरोवर के पास पहुँचे। वह सरोवर दलदल से भरा हुआ था। विध्वंसक इस बात को नहीं जानता था। वह झट सरोवर में कूद पड़ा और दलदल में फँस गया। दलदल से निकलने के लिए उसने अपना पूरा बल लगा दिया, पर वह सफल नहीं हो सका और अंत में उसी में धँसकर मर गया।

राजा ने लौटकर सुचरित की प्रशंसा के पुल बांध दिये, फिर कहा, "सुचरित, तुम्हारी मेधा विलक्षण है। मैं तुम्हारा भव्य सम्मान करना चाहता हूँ।"

पर सुचरित इसके लिए सहमत नहीं हुआ, बोला, "महाराज, अभिनन्दन और सम्मान मनुष्य के भीतर अहंकार को बढ़ावा देते हैं। वैसा कोई सम्मान पाकर मैं इतनी सरलता से समस्याओं पर विचार नहीं कर सकूँगा। इसलिए मुझे आप साधारण ही बना रहने दीजिए!"

कुछ दिन बाद एक समस्या और आगयी। राजा को गुप्तचरों से पता लगा कि राजकर्मचारियों एवं अधिकारियों की घूसखोरी हद से ज़्यादा बढ़ती जा रही है। राजा ने सुचरित से सलाह लेनी चाही, पूछा, "सुचरित, राजकर्मचारियों में ईमानदारी नहीं रही। वे घूस लेकर काम करने लगे हैं। बताओ, अगर तुम राजा होते तो क्या करते?"

सुचरित थोड़ी देर तक मौन रहा, फिर बोला, "महाराज, यह बात मैं सपने में भी नहीं सोच सकता कि मैं राजा होता तो क्या करता! मैं राजा हूँ ही नहीं। राजपद या तो परम्परा से मिलता है या बाहुबल से। पर उसे बचाये रखने के लिए और उसकी मज़बूती के लिए यह आवश्यक है

कि राजा में निजी विचारशीलता हो। आप स्वयं निर्णय करें कि क्या करना है, मैं तो एक साधारण-सा राजभक्त सेवक हूँ।"

सुचरित का उत्तर सुनकर राजा विक्रमदेव आश्चर्य-चकित रह गये, फिर अचानक क्रुद्ध होकर बोले, "सुचरित, मैं इसी क्षण तुम्हें नौकरी से अलग करता हूँ। तुम कहीं और जाकर अपना जीवन-निर्वाह करो!"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा, "राजन, सुचरित ने राजा विक्रमदेव की अनेक जटिल समस्याओं को हल किया था। फिर वह राजकर्मचारियों की घूसखोरी के साधारण से मामले में चुप क्यों रह गया? उसने यह क्यों कहा, 'आप राजा हैं, आप स्वयं निर्णय करें— स्वयं कोई सलाह क्यों नहीं दी? राजा विक्रमदेव ने भी सुचरित के साथ इतना अन्याय क्यों किया? इतनी सारी जटिल समस्याओं को सुलझा देनेवाले एक निस्वार्थी सेवक को नौकरी से अलग क्यों कर दिया? यदि आप इस सन्देह का समाधान जानबूझकर भी न देंगे तो आपका सिर फूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा, "राजा विक्रमदेव सुचरित के इस नये व्यवहार से आश्चर्यचकित अवश्य होते हैं, पर उनके मन में सुचरित को लेकर कोई संशय नहीं है। सुचरित एक श्रेष्ठ सेवक है। वह समझ जाता है कि जब तक वह राजा की सेवा में रहेगा, तब तक राजा स्वयं सोचने का प्रयत्न नहीं करेंगे। इसीलिए वह सलाह नहीं देता। वह अपने इस आचरण से होनेवाली राजा की प्रतिक्रिया को भी जानता था कि वे अवश्य उसे नौकरी से निकाल देंगे। राजा विक्रमदेव भी सुचरित के व्यवहार से सजग हो उठते हैं और अपने शासन को अपनी बुद्धि से चलाने का मन ही मन निर्णय कर लेते हैं। वे सुचरित को क्रूर भाव से नौकरी से नहीं निकालते, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि मेधावी सुचरित जहाँ कहीं भी जायेगा, अपने मेधा बल और निस्वार्थ भावना से किसी के भी हृदय में ऊँचा स्थान ग्रहण करेगा।"

राजा के इस प्रकार मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

दूसरी चाबी

शिवपुरी का निवासी नागराज तालों की मरम्मत करने और दुहरी चाबियों के बनाने में सिद्धहस्त माना जाता था। उसे कोई भी चाबी दो, वह उसकी नक़ल की दूसरी चाबी बना देता था।

एक दिन रामसहाय नाम का एक किसान नागराज के पास एक चाबी लेकर आया और बोला, "नागराज, मुझे इस चाबी की नक़ल की एक और चाबी बना कर दे दो!"

नागराज ने कहा, "ठीक है, कल आकर चाबी ले जाना।"

रामसहाय दूसरे दिन नागराज की दूकान पर पहुँचा। नागराज ने उसके हाथों में पहली चाबी के साथ दूसरी बनायी हुई चाबी रख दी।

रामसहाय ने नागराज द्वारा बनायी हुई चाबी को बड़े ध्यान से देखकर पूछा, "यह चाबी ठीक से काम तो देगी न?"

इस पर नागराज ने बड़े अभिमान से कहा, "मेरी कारीगरी की निपुणता के बारे में तुम्हें नहीं मालूम है क्या? आज तक तो ऐसा हुआ नहीं कि मेरे द्वारा बनायी गयी चाबी ने काम न दिया हो।"

"इसीलिए तो मैं अपने ताले की चाबी तुम्हारे पास लाया था। मेरी यह चाबी काम ही नहीं कर रही थी। इसीलिए मुझे तुमसे एक और चाबी तैयार करवानी पड़ी।" रामसहाय ने कहा।

नागराज उसका मुँह देखता रह गया।
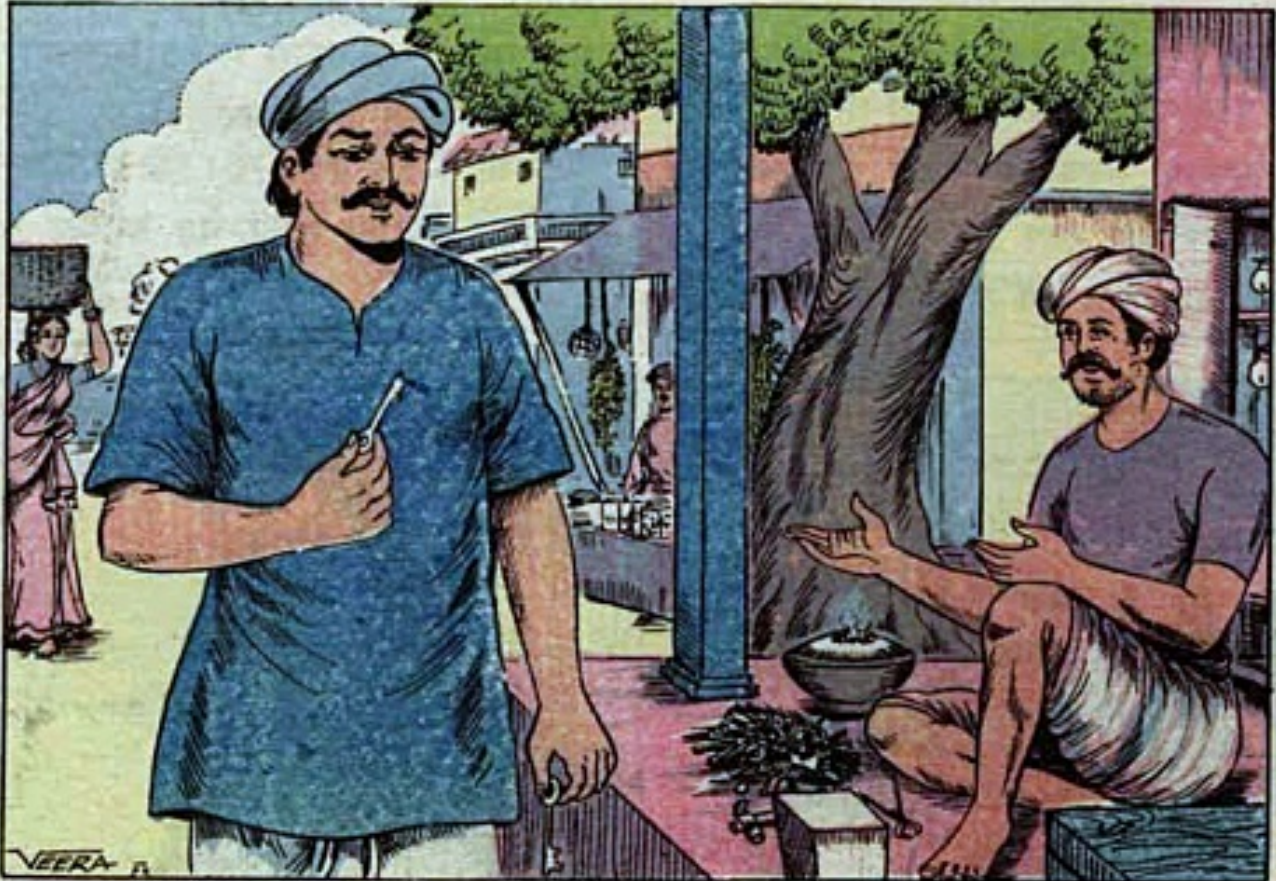
बच्चों के लिए चन्दामामा की मनोरंजक प्रतियोगिता

३ आकर्षक भागों में !

प्रतियोगिता १

भारत के महान सम्राट

प्रतियोगिता २

भारत की महान रानियाँ

प्रतियोगिता ३

भारत के महान दम्पति

१,३०,००० रु० से अधिक मूल्य के पुरस्कार जीतिये !

११ भाषाओं में से हर भाषा में हर प्रतियोगिता के लिए बड़े-बड़े पुरस्कार

११ प्रथम पुरस्कार : २००० रु० की छात्रवृत्ति
११ द्वितीय पुरस्कार : १००० रु० की छात्रवृत्ति
११ तृतीय पुरस्कार : ५०० रु० की छात्रवृत्ति

साथ में बम्पर पुरस्कार

पहला बम्पर : १०००० रु० की छात्रवृत्ति *
दूसरा बम्पर : ५००० रु० की छात्रवृत्ति *
तीसरा बम्पर : २५०० रु० की छात्रवृत्ति *
* [illegible] वर्ष की अवधि में [illegible] समान किश्तों में

२२० सांत्वना पुरस्कार—एक वर्ष के लिए निःशुल्क चन्दामामा

कैसे भाग लें

अपने इतिहास की पुस्तकें और चन्दामामा के पुराने अंक निकालिये और सारे परिवार को एकत्रित कर शुरू कीजिए।
अपनी इतिहास की पुस्तकें और चन्दामामा के पुराने अंक निकालिये और सारे परिवार को एकत्रित कर शुरू कीजिए। उन्हें पहचानने के लिए चित्रों में सूत्रों को
साथ में छपे चित्र भारत के इतिहास और पुराणों के प्रसिद्ध राजाओं के चित्र हैं। उन्हें पहचानने के लिए चित्रों में सूत्रों को
तलाश कीजिए और तब खाने में उचित अंक को लिख भर दीजिए।
आगे, छह प्रदर्शित राजाओं में से किसी एक को चुनिये. रिक्त स्थान को भरकर अगले पत्र में वाक्य को पूरा कीजिए "मुझे
राजा .... होना पसन्द होता क्योंकि ...." स्वरचित १५ शब्दों से अधिक का उपयोग मत कीजिए।
अपने उत्तर को सचमुच रोचक बनाइये—याद रखिए श्रेष्ठतम जवाबों को ही पुरस्कार मिलेगा।
अपना नाम, पता और आयु भरिये, पत्रा काटिये और अपनी प्रविष्टि हमें डाक से भेज दीजिए।
और जब आप परिणामों की प्रतीक्षा कर रहे होंगे, आपको चन्दामामा के आगामी अंकों में प्रतियोगिता २ और प्रतियोगिता ३ के
बारे में जानने को मिलेगा।

प्रतियोगिता के नियम

१. यह प्रतियोगिता १६ वर्ष की आयु तक के सभी बालकों के लिए है। एक बालक कितनी भी प्रविष्टियाँ भेज सकता है, किंतु वह चन्दामामा में मुद्रित प्रवेश-पत्र पर ही होनी चाहिए।

२. कोई भी बालक तीनों प्रतियोगिताओं (भारत के महान सम्राट, भारत की महान रानियाँ, भारत के महान दम्पति) में से एक या सभी प्रतियोगिताओं में भाग ले सकता है और पुरस्कार जीत सकता है। वह बम्पर पुरस्कार को भी आजमा सकता है।

३. प्रविष्टियाँ सुपाठ्य रूप से भरी जानी चाहिएं और वे ११ भाषाओं में से किसी भी भाषा में हो सकती हैं जिनमें चन्दामामा प्रकाशित होता है।

४. प्रतियोगिता १ के लिए प्रविष्टियाँ ३१ अक्तूबर १९८७ से पहले हमारे पास पहुँच जानी चाहिएँ।

५. प्रविष्टियों के विलम्ब के लिए, उनके खोने और नष्ट होजाने के लिए प्रबन्धक उत्तरदायी नहीं होंगे।

६. प्रविष्टियाँ साधारण डाक से ही भेजी जानी चाहिएँ।

७. प्रतियोगिता चन्दामामा प्रकाशन, हिन्दुस्तान थोमसन एसोसिएट में संचालन और उनके परिवार के सदस्यों के अलावा सभी भारतीय नागरिकों के लिए खुली है।

८. प्रविष्टियों का निर्णय एक स्वतंत्र निर्णायक समिति के द्वारा होगा, जिसका निर्णय अंतिम माना जायगा। किसी भी पत्राचार पर विचार नहीं किया जायगा।

९. चन्दामामा में विजेताओं की घोषणा होगी और उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी डाक द्वारा सूचना दी जायगी।

आवश्यक : बम्पर पुरस्कार विभाग

अपनी प्रविष्टि भेजने से पहले अपने प्रवेश-पत्र से 'चन्दामामा प्रतियोगिता १' अंकित लेबल को सावधानी से काटकर सुरक्षित रखिये। प्रतियोगिता २ और ३ के साथ भी ऐसा ही कीजिए। ये तीनों लेबल बम्पर विभाग प्रवेश-पत्र (दिसम्बर अंक में प्राप्य) पर चिपकाने होंगे। बम्पर पुरस्कार के लिए इन तीनों लेबल से युक्त प्रविष्टियों पर ही विचार किया जायगा।

चन्दामामा की यह प्रति सुरक्षित रखिये। बम्पर विभाग के प्रश्न चन्दामामा के सितम्बर, अक्तूबर और नवम्बर अंकों पर आधारित होंगे।

प्रतियोगिता १

(प्रवेश पत्र)

जैसा कि उदाहरण में दर्शाया गया है इन छह राजाओं के चित्रों को उचित संख्या भर कर उनके सही नाम से मिलाइये।

शाहजहाँ	१	टीपू सुलतान	४	पोरस	७
कुबेर	२	धृतराष्ट्र	५	शिवाजी	८
शेरशाह	३	भगीरथ	६	दशरथ	९

बम्पर पुरस्कार के लिए यह लेबल सुरक्षित रखिये

जब आप बम्पर पुरस्कार में (दिसम्बर अंक में) भाग लें, आपको इसे बम्पर विभाग के प्रवेश-पत्र पर चिपकाना होगा।

चन्दामामा प्रतियोगिता १

(प्रवेश पत्र)

अब पिछले पृष्ठ पर दर्शित इन छह चित्रों में से राजाओं के नाम से किसी एक नाम को लीजिए और 'क्योंकि' के बाद १५ शब्दों से अधिक का प्रयोग न कर इस वाक्य की पूर्ति कीजिए ...

मुझे राजा .... होना पसन्द होता क्योंकि ....

....

....

....

....

आपका नाम : ....

आयु :..................... पता : ....

....

इस पत्र को काटिये, इस प्रतियोगिता का कूपन अपने पास सुरक्षित रखिये और अपना प्रवेश-पत्र तत्काल डाक से रवाना कीजिए, लिफाफे पर लिखिए 'प्रतियोगिता १' प्रतिः

चन्दामामा प्रतियोगिता १
चन्दामामा पब्लिकेशन्स
१८८ आर्काट रोड़
मद्रास - ६०० ०२६

प्रतियोगिता १ की अन्तिम तारीख़ : **अक्तूबर ३१, १९८७**

बम्पर पुरस्कार के लिए यह लेबल सुरक्षित रखिये

फतहपुर सीकरी

आगरा से चालीस किलो मीटर दक्षिण-पश्चिम में पहाड़ी पर एक अद्भुत क़िला विद्यमान है। सम्राट अक़बर ने इस क़िले का निर्माण कराया था। पर कुछ ही बरसों बाद यह क़िला ख़ाली और निर्जन होगया था तथा इसका वैभव भी नष्ट होगया था।
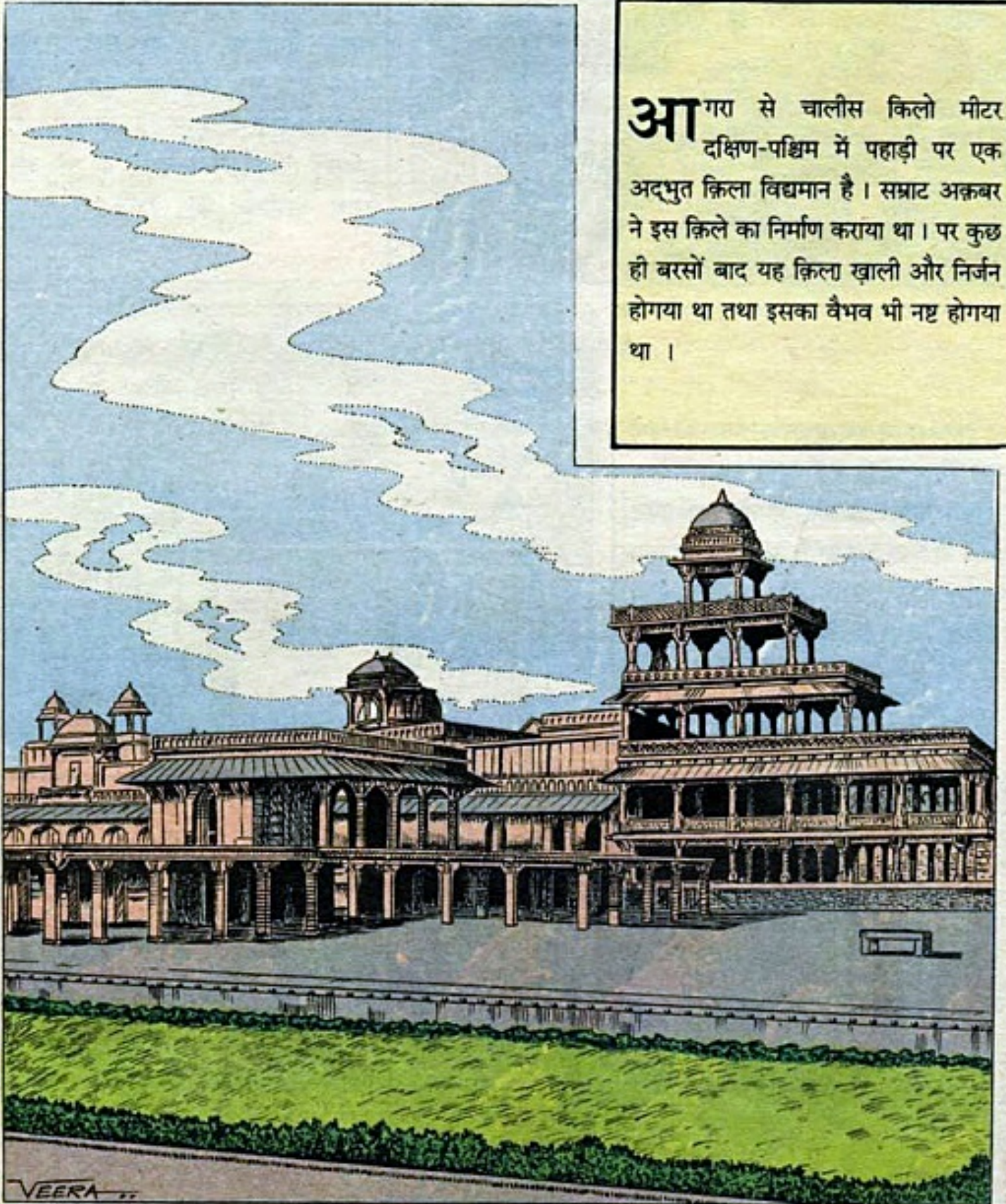
अक़्बर महान ने अनेक प्रांतों को जीतकर सुविशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। सम्राट अक़्बर के बहुत काल तक कोई संतान नहीं हुई थी। इसी दुख से उन्होंने एक़ पहाड़ पर वास करनेवाले फ़क़ीर शेख़ सलीम चिश्ती की शरण ली। वे फ़क़ीर की महिमाएँ सुनकर उसके दर्शनों को गये और उससे आशीर्वाद प्राप्त किया।

कुछ समय बाद सम्राट अक़्बर की हिन्दू रानी जोधाबाई ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। फ़क़ीर के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए अक़्बर ने अपने पुत्र का नाम सलीम रखा। वही बालक कालांतर में जहाँगीर नाम से विख्यात हुआ।

फ़क़ीर के निकट ही रहने का विचार करके सम्राट अक़्बर ने अपनी राजधानी को आगरा से सीकरी पर्वत पर लेजाने का निश्चय किया। पर्वत पर दुर्ग का निर्माण तेज़ी से चलने लगा।

सीकरी को अपनी राजधानी बनाने के बाद सम्राट अक़बर ने १५७३ में गुजरात पर आक्रमण कर दिया। शुरू में बादशाह को अनेक विघ्नों का सामना करना पड़ा, पर अंत में फतह यानी विजय प्राप्त कर वे अपनी राजधानी को लौट आये। गुजरात की फतह के कारण अक़बर ने अपनी राजधानी को फतहपुर सीकरी नाम दिया।

अक़बर ने सीकरी दुर्ग में १५ वर्ष बिताये। उन्होंने अपने मित्र मंत्री वीरबल् के साथ वहाँ कुछ समय हँसी-खुशी से बिताया। सुप्रसिद्ध गायक तानसेन भी उस समय अक़बर के दरबार में थे। तानसेन इस सुन्दर दुर्ग के परिसर से अत्यन्त आकर्षित थे।

पर सीकरी दुर्ग का आनन्द अधिक समय तक क़ायम नहीं रह सका। वहाँ पानी का अकाल पड़ा। प्रजा को प्यास बुझाने के लिए घूंटभर पानी भी न रहा। काफ़ी कोशिशों के बावजूद भी पानी का अकाल दूर न हुआ। इसलिए क़िले को विवश होकर त्यागना पड़ा।

पृथ्वीतल से १७६ फुट ऊँचा तथा मंच से १३४ फुट ऊँचा सिंहद्वार, जिसे बुलन्द दरवाज़ा कहा जाता है, यहीं पर है। संगमरमर तथा चूने के पत्थरों से निर्मित यह अत्यन्त विशाल सिंहद्वार दर्शकों को अपनी ओर अनायास ही आकर्षित कर लेता है।

यहाँ का एक मुख्य भवन हवामहल है। उसे पंचमहल भी कहते हैं। जब यह क़िला वैभवपूर्ण स्थिति में था तब शाही घराने की स्त्रियाँ इसी भवन में निवास करती थीं। इस महल में हवा का संचार आसानी से हो सके, इसलिए इसे पंचमंज़िला बनाया गया है।
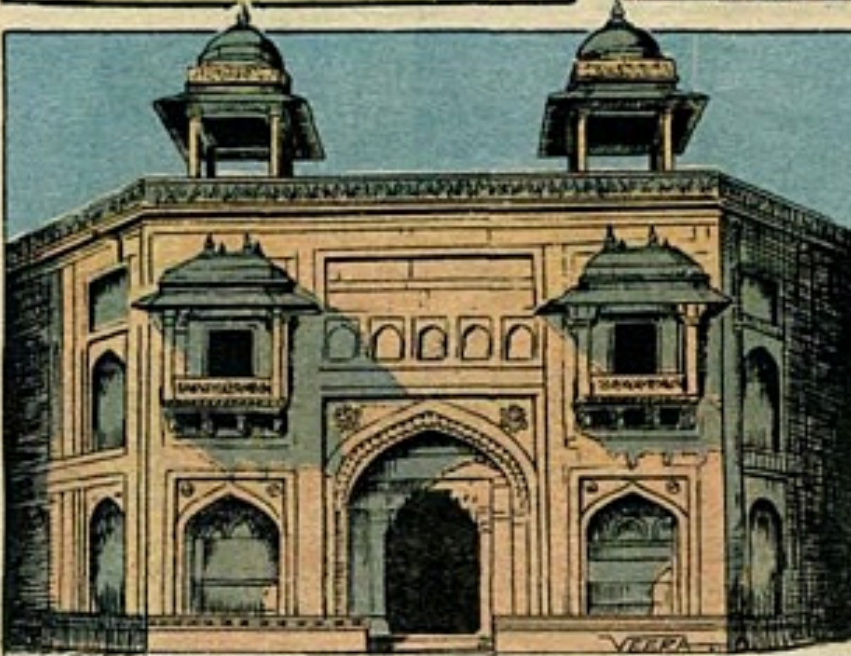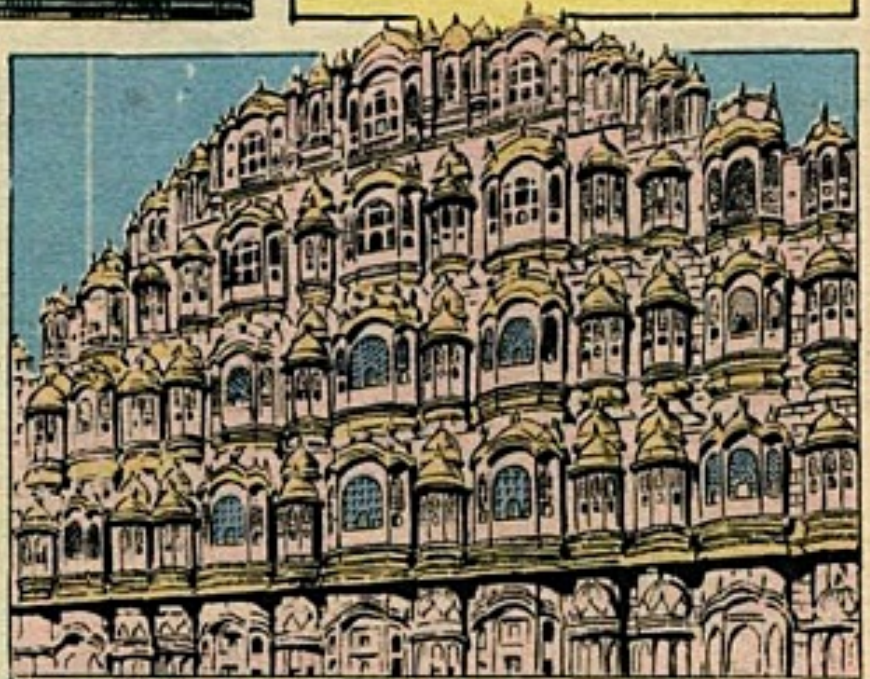
सम्राट अक़बर के द्वारा इस दुर्ग को छोड़कर चले जाने के बाद केवल इमारत की रक्षा करने के लिए इसकी देखभाल करना आसान काम नहीं था। धीरे-धीरे इसका वैभव क्षीण दशा को प्राप्त होता चला गया। दुर्ग उजड़ गया। पर अब एक़ स्मारक के रूप में फतहपुर सीकरी प्रसिद्धि को प्राप्त करता जा रहा है।
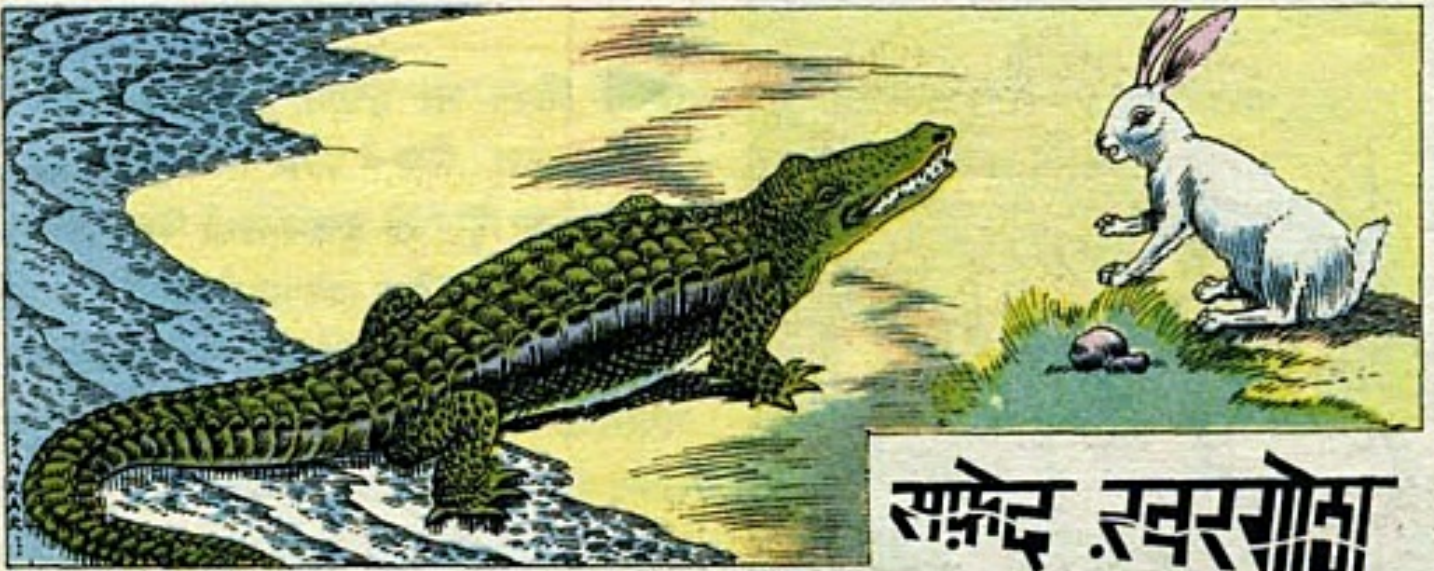
सफ़ेद ख़रगोश

जापान देश से कुछ ही दूर पर खरगोशों का एक टापू था। वहाँ अनेक रंगों के खरगोश थे, पर विशुद्ध सफ़ेद रंग का एक ही ख़रगोश था। यह शुद्ध सफ़ेद सुन्दर खरगोश न केवल वर्ण में ही सबसे सुन्दर था, बल्कि इसका अन्तःकरण भी शुद्ध था और यह अनेक प्रकार की कल्पनाएँ किया करता था। सफ़ेद खरगोश प्रतिदिन समुद्र की उत्तरी दिशा की रेत में लेट जाता और वहाँ से जापानी समुद्री-तट की ओर निर्निमेष आँखों से ताका करता था। उसके मन में यह प्रबल इच्छा थी कि वह उस देश में जाये और वहाँ के सारे आश्चर्यों को देखे।

सफ़ेद खरगोश के मन में इस प्रकार के विचार आने का कारण एक मगरमच्छ भी था। वह जापानी-तट से जब-तब इस तट पर आया करता और वहाँ की रेत में विश्राम किया करता। सफ़ेद खरगोश और उस मगरमच्छ के बीच अच्छा मैत्री-सम्बन्ध स्थापित होगया था। मगरमच्छ उसे अनेक किस्से सुनाया करता— जापानी-तट की रेत गंदी है। वहाँ मनुष्य नाम के प्राणी वास करते हैं। वे सीधे खड़े होकर नीचे के पैरों से चलते हैं और ऊपर के पैरों को हाथ कहकर उनसे काम करते हैं। इन मनुष्यों का एक सम्राट है। उस सम्राट के एक पुत्री है, जिसके केश अमावस्या की रात के अंधकार के सदृश हैं और उसकी देह पूर्णिमा की चांदनी की भाँति उजली है। इस प्रकार मगरमच्छ अपनी बातों से खरगोश का मन मोह लेता। मगरमच्छ के मुँह से इन बातों को सुनकर खरगोश के मन में समुद्र के जापानी-तट पर प्रवेश करने की उत्कट अभिलाषा जाग उठती। वह उस देश की सारी सुन्दरता देखना चाहता था।

एक बार मगरमच्छ ने सुनाया कि सम्राट की पुत्री राजकुमारी योकिता से विवाह करने की

जापानी लोक कथा

कामना लेकर अनेक उच्च परिवारों के युवक आ रहे हैं, पर उसने उनके साथ विवाह करने से इनकार कर दिया है। दूसरे दिन मगरमच्छ ने एक और नया समाचार सुनाया— राजकुमारी योकिता से विवाह करने की कामना लेकर दूर देशों से पाँच राजकुमार आ रहे हैं और इस बार इस बात की चर्चा है कि राजकुमारी उनमें से किसी एक के साथ विवाह अवश्य कर लेगी।

सफ़ेद खरगोश के मन में एक बार जापान जाने और राजकुमारी योकिता को देखने की इच्छा जागृत हुई। बातें सुन-सुनकर बहुत दिन व्यतीत होगये थे। अब वह सब कुछ देखना चाहता था। उसने अपने मित्र मगरमच्छ के सामने अपनी इच्छा प्रकट की और कहा, "भाई मगरमच्छ, तुम मुझे अपनी पीठ पर बिठा कर समुद्र पार करवा दो तो मैं जीवन भर तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा।"

"खरगोश भैया, अगर मैं तुम्हारी यह सहायता कर दूँगा तो तुम्हारे सभी रिश्तेदार मेरे शत्रु बन जायेंगे। ऐसा होने पर मैं तुम्हारे इस तट की कोमल रेत पर शयन नहीं कर पाऊँगा।" मगरमच्छ ने आपत्ति उठाकर कहा। पर वह सफ़ेद खरगोश के निरन्तर अनुरोध को टाल नहीं पाया और उसने उसे अपनी पीठ पर बिठाकर जापानी-तट पर छोड़ दिया। तट कंकड़ और मिट्टी से भरा था।

सफ़ेद खरगोश अभी तट पर कुछ ही दूर चला था कि एक कुत्ते ने उसका पीछा करके उसे नोच डाला। अब तो खरगोश भयभीत हो उठा। उसे जान का डर सताने लगा। पहली बार वह एक अजनबी स्थान पर आया था। अपने घावों की पीड़ा लेकर वह एक नदी के किनारे पहुँचा। उस नदी पर एक पुल बना हुआ था। पुल के पास घनी घास वाला एक प्रदेश था। उसी में सफ़ेद खरगोश छिप गया और इस बात का पछतावा करने लगा कि वह अपने देश को छोड़कर यहाँ क्यों चला आया? यहाँ कौन है उसका? कोई उसकी बात भी नहीं पूछेगा।

थोड़ी देर बाद पुल पर घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई दी। खरगोश पुल के नीचे से बाहर आया और उसने पहली बार मनुष्य नामक प्राणी को देखा। चार घोड़ों पर चार मनुष्य सवार थे और शहर की दिशा में जा रहे थे। खरगोश ने सुना— वे चारों आपस में बात कर रहे थे—

"राजकुमारी योकिता के महल को जाने का सबसे छोटा मार्ग शायद यही है ।"

मगरमच्छ ने सफ़ेद खरगोश को बताया था कि पाँच सुन्दर राजकुमार राजकुमारी से विवाह करने की कामना से आनेवाले हैं। उनमें से ये चार होंगे, यह कल्पना करके खरगोश ने उन लोगों से निवेदन किया कि वे उसे भी अपने साथ राजकुमारी के महल में ले जायें ।

"तुम्हारे घाव, तुम्हारी यह सूरत और ऐसी इच्छा! वाह! राजकुमारी तो तुम्हें देखकर बहुत प्रसन्न होगी!" यह कहकर उन चारों राजकुमारों ने उसकी हँसी उड़ायी। उनमें से एक ने उससे कहा, "तुम ऐसा करो! पानी में स्नान कर रेत पर लोटो, इससे तुम्हारे घाव भर जायेंगे ।"

खरगोश ने उसकी बात को सच माना और खारे पानी की उस नदी में स्नान किया। खारा पानी लगते ही उसके घाव जल उठे। जलन से मुक्त होने के विचार से वह गंदी रेत में लोटने लगा। अब तो उसकी पीड़ा का पार न रहा। इतना ही नहीं, दूध के सफ़ेद झाग जैसी उसकी देह मलिन होकर घृणित बन गयी ।

"छिः! मनुष्य ऐसे होते हैं? इनसे तो कुत्ते ही भले हैं।" खरगोश ने मन में सोचा और वह पुल के पास जाकर फूट-फूटकर रोने लगा ।

उसी समय पुल पर से एक और मनुष्य गुज़रा। उसकी पीठ पर चार बिस्तरबंद लदे थे। उसने खरगोश को देखते ही अपना बोझ उतारा और खरगोश को गोद में लेकर प्यार से पूछा, "तुम्हारी

देह इस तरह मलिन कैसे होगयी? तुम इस तरह रो क्यों रहे हो?"

खरगोश ने सोचा, यह मानव अच्छा लगता है। तब उसने अपनी सारी रामकहानी उसे सुनायी। उसने उन चार घुड़सवार मनुष्यों की दुष्टता के बारे में भी उसे बताया। उस पाँचवें युवक ने खरगोश को बताया कि वे चारों उसके भाई राजकुमार हैं और वह पाँचवाँ राजकुमार उन सबमें छोटा है। उसने यह भी बताया कि उसके चारों भाई राजकुमारी से विवाह की कामना लेकर यहाँ आये हैं और वह उनके सेवक के रूप में आया है।

"पर तुम राजकुमारी योकिता के साथ विवाह क्यों नहीं करते? सुना है वह अत्यन्त रूपवती है और दयालु भी है। तुम अवश्य उससे विवाह करो ।" खरगोश ने कहा ।

राजकुमार ने कोई जवाब न दिया । उसने खरगोश को शुद्ध जल से धोया, इसके बाद उसके घावों पर घास का पुष्पराग छिड़क दिया । खरगोश की पीड़ा एकदम दूर होगयी । इसके बाद वह राजकुमार बोला, "हे सफ़ेद खरगोश! तुम यहीं पर विश्राम करो! मैं ये बिस्तरबंद अपने भाइयों के पास पहुँचाकर तुम्हें राजकुमारी के पास ले चलूँगा ।"

राजकुमार चारों बिस्तरबंद अपने भाईयों के पास पहुँचाकर लौट आया । उस समय सफ़ेद खरगोश गहरी नींद सोरहा था । तब तक उसके घावों पर रोयें निकल आये थे । पाँचवें राजकुमार ने खरगोश को गोद में उठाया और राजकुमारी के महल की तरफ़ चल दिया । राजकुमारी योकिता तब तक चारों राजकुमारों से विवाह के लिए इनकार कर चुकी थी ।

द्वारपाल ने पाँचवें राजकुमार को देख राजकुमारी योकिता को सूचित किया, "राजकुमारी, आपके साथ विवाह करने की कामना से एक़ और राजकुमार आये हुए हैं । उनके पास एक सफ़ेद खरगोश भी है और वे आपसे मिलना चाहते हैं ।"

"सफ़ेद खरगोश! ऐसे खरगोशों के बारे में तो मैंने कभी सुना तक नहीं । तुम राजकुमार को शीघ्र अंदर भेज दो!" राजकुमारी ने द्वारपाल को आदेश दिया ।

जैसे ही राजकुमार ने प्रवेश किया, राजकुमारी ने सफ़ेद खरगोश को देखते ही उसे प्यार से अपनी गोद में उठा लिया । फिर उसकी देह पर हाथ फेरकर बोली, "वाह! यह खरगोश कितना प्यारा और सुंदर है ।"

खरगोश ने राजकुमारी से कहा, "ये पाँचवें राजकुमार कितने सुन्दर हैं । उन्होंने मेरी बहुत सहायता की है । आप अवश्य ही इनके साथ विवाह करें !"

राजकुमारी योकिता ने सफ़ेद खरगोश की बात मान ली । राजकुमारी का विवाह पाँचवें राजकुमार के साथ धूमधाम से संपन्न होगया ।

सफ़ेद खरगोश सदा के लिए राजकुमारी के पास रह गया ।

उत्तर रामायण

श्रीरामचंद्र के अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने के लिए अन्य ऋषियों की भाँति ही महर्षि वाल्मीकि का आगमन भी हुआ। वे अपने शिष्यों के साथ अयोध्या में आये और अपने लिए विशेष रूप से बनायी गयी ऋषि-वाटिका में स्थित पर्णशाला में ठहर गये। उन्होंने अपने शिष्यों को अनुमति दी कि वे उनके द्वारा रचित रामायण का गान सर्वत्र कर सकते हैं। वाल्मीकि ने कुश-लव को वत्सलभाव से कहा, "पुत्रो, यदि तुमसे कोई जिज्ञासा प्रकट करे कि तुम किसकी संतान हो, तो तुम इतना ही उत्तर देना— 'हम वाल्मीकि के शिष्य हैं।' तुम्हें कोई धन दे तो ग्रहण मत करना। यदि कभी ऐसा अवसर आये कि श्रीराम तुम्हें रामायण-गान के लिए आमंत्रित करें, तो सादर स्वीकार कर उनके समक्ष भी रामायण का गान करना। वे हमारे राजा हैं, उनके प्रति विनम्र व्यवहार करना!"

"पूज्यवर, हम ऐसा ही करेंगे।" यह कहकर कुश और लव पर्णशाला से निकल पड़े।

कुश और लव राग-ताल सहित यत्र-तत्र रामायण का अद्‌भुत गान करने लगे। उनकी स्वर-लहरी के सम्मोहन में सारा नगर डूबने-उतराने लगा। रामायण करुण-रस प्रधान काव्य था, जब कुश-लव करुण राग में उसका गान करते तो सबके नेत्रों से जलधारा बहने लगती। उनकी प्रशंसा सुन श्रीराम ने भी उन्हें निमंत्रित किया और एक विशाल सभा में उनके गान का आयोजन किया।

उस विशाल सभा में ऋषि-मुनि, तपस्वी, राजा, पंडित, शास्त्रज्ञ, संगीतकार, कलाकार, नृत्यकला-

विद् तथा तमाम जनसमुदाय एकत्रित था ।

प्रथम दिन कुश-लव ने रामायण के प्रथम बीस सर्गों का गान किया । वह गान देवों को भी लुभानेवाला था । गान सुनने के बाद श्रीराम के हृदय में उन्हें पुरस्कृत करने की इच्छा जागृत हुई । उन्होंने लक्ष्मण से कहा, "इन किशोर बालकों को अट्ठारह सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ देने की व्यवस्था करो !"

जब लक्ष्मण ने कुश-लव को स्वर्ण मुद्राएँ अर्पित करनी चाहीं तो उन बालकों ने कहा, "यह स्वर्ण किसलिए? हम तो अरण्य में रहते हैं और कन्दमूल फल हमारा आहार तथा वल्कल हमारे वस्त्र हैं । हमारे लिए स्वर्ण का कोई उपयोग नहीं है । स्वर्ण तो नागरिकों के काम आता है ।"

श्रीराम उनके मुख से यह उत्तर सुनकर विस्मित और आनन्दित हुए । उन्होंने कहा, "पुत्रो, तुम महान हो । क्या तुम बता सकते हो कि तुम दोनों जिस काव्य का गान करते हो, वह कितना बड़ा है और उसके रचयिता कौन हैं? हमें बड़ी उत्सुकता है ।"

"राजन, महामुनि वाल्मीकि इस महाकाव्य के रचयिता हैं । वे भी आपके यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए यहाँ पधारे हुए हैं । यदि आपको हमारा गान सुमधुर लगा हो तो हम प्रतिदिन आपको इस काव्य को गाकर सुनाया करेंगे ।" बनवासिनी सीता के पुत्रों ने उत्तर दिया ।

श्रीरामचंद्र ने प्रति दिन रामायण सुनने की इच्छा व्यक्त की । कुश-लव प्रतिदिन सभा में आते और रामायण के कुछ सर्गों का गान कर चले जाते । अन्य सारे आयोजन पीछे रह गये । सारा लोक उन किशोर सुदर्शन बालकों के मधुर गायन को सुनता । इस प्रकार कई दिन बीत गये । पूरी रामायण सुनने के पश्चात् सबको यह ज्ञान होगया कि कुश-लव महारानी सीता के पुत्र हैं ।

श्रीराम ने अपने विशेष दूतों के साथ मुनि वाल्मीकि के पास यह संदेश भेजा, "महामुनि, यदि सीता पवित्र हैं, तो वह यहाँ आकर स्वयं अपनी पवित्रता प्रमाणित करें । उन्हें अपनी पवित्रता प्रमाणित करने के लिए शपथ-ग्रहण करनी होगी । मैं इस कार्य के लिए आपकी अनुमति चाहता हूँ ।"

वाल्मीकि ने दूतों के मुख से श्रीराम का संदेश

सुना । वाल्मीकि ने उत्तर दिया, "श्रीराम की इच्छानुसार देवी सीता शपथ ग्रहण करेंगी ।"

दूतों से वाल्मीकिमुनि की स्वीकृति पाकर रामचंद्र ने सभासदों के समक्ष यह घोषणा की कि देवी सीता भरी सभा में अपनी पवित्रता की शपथ ग्रहण करेंगी । सबने प्रसन्न भाव से रामचंद्र के इस आयोजन का अभिनन्दन किया ।

दूसरे दिन प्रातःकाल श्रीरामचंद्र ने यज्ञ-वाटिका में जाकर सभी ऋषि-मुनियों के सम्मुख सीता के शपथ-ग्रहण की सूचना दी । यज्ञ-भूमि में राक्षस, वानर तथा अनेक देशों से आये हुए अभ्यागत थे । सभा पूर्ण रूप से भरी हुई थी और मौन छाया हुआ था । जब वाल्मीकि के पीछे अत्यन्त दीन भाव से चलकर आरही करुणा की मूर्ति सीता ने प्रवेश किया तो सबके हृदय विदीर्ण होगये । यह कैसी विडम्बना थी कि जिसकी पवित्रता को स्वयं गंगा और अग्नि अपनी पवित्रता का साक्षी बनाती थीं आज वही सीता शपथ ग्रहण करेंगी ।

मुनि वाल्मीकि ने श्रीराम से कहा, "हे राम, सीता की पवित्रता त्रिभुवन में विख्यात है । अग्नि और गंगा अपने को सीता की पवित्रता से पवित्र मानती हैं । तुमने अज्ञानी प्रजा के संशय को महत्व देकर सीता का परित्याग किया । सीता तबसे मेरे आश्रम में बनवासिनी की भाँति निवास करती है । आज सीता सबके सम्मुख अपनी पवित्रता की शपथ लेगी । कुश और लव सीता के और तुम्हारे पुत्र हैं । मैंने कभी असत्य-भाषण नहीं किया । यदि सीता में अपवित्रता का लेश भी हो तो मेरी सारी तपस्या व्यर्थ हो जाये । तुमने अपवाद से डर कर सीता का त्याग किया, जबकि तुम स्वयं सीता के निष्पाप होने में पूरा विश्वास करते हो । मैं तुम्हारा हृदय अच्छी तरह जानता हूँ ।"

श्रीराम ने मुनि वाल्मीकि को प्रणाम कर कहा, "मुनिवर, आपने जो कहा, सत्य है । वनवास के समय ही अग्निदेव ने सीता की पवित्रता की साक्षी दे दी थी । इसीलिए सीता मेरे साथ अयोध्या आयीं और राजमहिषी बनी । कुश-लव मेरे ही पुत्र हैं । फिर भी, इस महासभा में यदि सीता शपथ-ग्रहण कर अपनी पवित्रता प्रमाणित कर दें तो मैं उन्हें अवश्य स्वीकार करूँगा । महामुनि, मैं राजा हूँ । प्रजा का अनुरंजन करना मेरा सबसे

बड़ा धर्म है । यही कारण है कि मैं लोक के समक्ष देवी सीता के शपथ-ग्रहण का आग्रह दिखा रहा हूँ ।"

गेरुए वस्त्रधारिणी सीता ने हाथ जोड़ पृथ्वी पर दृष्टि गड़ाकर यह शपथ ली, "हे पृथ्वी माता, यदि मैंने अपने हृदय में राम के अतिरिक्त कभी एक क्षण के लिए भी किसी का स्मरण न किया हो तो मुझे विवर प्रदान कर कि मैं तुझमें समा जाऊँ । हे पृथ्वी माता, यदि, मन, वचन, कर्म से मैंने केवल राम की ही आराधना की हो तो मुझे विवर प्रदान कर कि मैं तुझमें समा जाऊँ । यदि मैं राममय हूँ तो हे पृथ्वी माता, तू मुझे मार्ग दे मैं तुझमें समा जाऊँ ।"

सीता के मुँह से इन शब्दों के निकलते ही पृथ्वी फट गयी और महा नाग अपने मस्तक पर दिव्य सिंहासन के साथ पृथ्वी के गर्भ से ऊपर आये । उस सिंहासन की प्रभा अद्‌भुत थी । नागफण पर मणियाँ प्रकाशित हो रही थीं । उस सिंहासन पर पृथ्वी माता मानवी के रूप में विराजमान थीं । उन्होंने अत्यन्त वात्सल्यपूर्वक अपने दोनों हाथ बढ़ाकर सीता को उठाकर अपने पास बैठा लिया । सिंहासन तत्क्षण पृथ्वी के विवर में समा गया ।

यह दृश्य देखकर सारा लोक हतबुद्धि रह गया । सबकी दृष्टि पृथ्वी के उस विवर-स्थान की ओर लगी हुई थी, जहाँ सिंहासन सीता को लेकर अदृश्य होगया था । अब सबने श्रीराम को देखा । अचानक वहाँ कोलाहल आरंभ होगया । वानर रुदन करने लगे । मुनियों ने सीता को साधुवाद दिया । सबने उस स्थान की मिट्टी माथे से लगायी । देवी सीता अन्तर्धान हो चुकी थीं ।

श्रीरामचंद्र अपने कर-दण्ड पर अपना शरीर टिकाकर सिर झुकाये देर तक अश्रुपात करते रहे । फिर उनके मुँह से ये उद्‌गार निकले, "हे भूदेवी, मैंने आज तक इतनी यातना कभी नहीं झेली । मेरी सीता को मुझे वापस कर दे, अन्यथा मुझे भी मार्ग दे! मैं भी तुझमें समा जाँऊगा ! अरे, मेरा धनुष-बाण लाओ, मैं पृथ्वी को विदीर्ण कर दूँगा अब मैं जीकर क्या करूँगा !"

ऋषि-मनियों ने श्रीराम को सांत्वना दी ।

वाल्मीकि मुनि कुश और लव को लेकर अपनी पर्णशाला में लौट गये । सीता का स्मरण

करते हुए वह रात उन्होंने जागकर बितायी ।

दूसरे दिन जब सभा आरंभ हुई, कुश-लव ने उत्तर रामायण का गान किया। यज्ञ समाप्त हुआ। श्रीराम ने यज्ञ में अभ्यागत लोगों का उचित सत्कार कर उन्हें विदा किया और वे अपने पुत्रों के साथ राजभवन में आये। इसके बाद उन्होंने सीता की एक स्वर्णप्रतिमा का निर्माण कराया और उसे सहधर्मिणी के स्थान पर विराजित कर अनेक अश्वमेध एवं राजसूय यज्ञ संपन्न किये। वे धर्म के रक्षक, न्यायप्रिय, प्रजा वत्सल राजा के रूप में प्रसिद्ध हुए। उनके राज्य में अकाल मृत्यु, दुख और देवी विपदा का पूर्ण अभाव था। लोग 'रामराज्य' की दुहाई देने लगे ।

कालान्तर में कौसल्या, सुमित्रा और कैकेयी आदि राजमाताओं की मृत्यु हुई। राम ने उनकी अंत्येष्टियाँ करके विपुल दान दिया ।

कुछ दिन बाद कैकेयी के भाई युधाजित ने गार्ग्य के हाथ दस हज़ार अश्व उपहार में भेजकर श्रीराम के पास सन्देश भेजा, "श्रीराम, सिन्धुनदी के दोनों पार्श्व में स्थित गन्धर्वदेश अत्यन्त शोभायमान है। वहाँ पर शैलूष संतति के तीन करोड़ जन हैं, जो अत्यन्त बलवान हैं। आप उन्हें पराजित कर गन्धर्वदेश पर अधिकार कर लीजिए! आपका कल्याण हो!"

मामा युधाजित का सन्देश सुनने के बाद श्रीरामचंद्र ने कहा, "भरत के तक्ष और पुष्कल दो पुत्र हैं। भरत के साथ ये दोनों पुत्र और सेना जायेगी। भरत गन्धर्व देश को पराजित कर उसे

दो भागों में विभाजित करेगा और दोनों राज्यों पर तक्ष और पुष्कल का अभिषेक कर वापस लौट आयेगा ।"

श्रीराम की आज्ञानुसार भरत ने तक्ष और पुष्कल तथा भारी सेना के साथ केकय देश की ओर प्रस्थान किया। पंद्रह दिन की यात्रा के पश्चात् केकय देश पहुँचकर भरत अपने मामा युधाजित से मिले। इसके पश्चात् उन्होंने गन्धर्व देश की ओर प्रस्थान किया। गन्धर्वों के साथ इस युद्ध में गन्धर्वों का नाश हुआ। भरत ने वह देश जीतकर उसके दो टुकड़े किये। तक्ष के नाम पर तक्षशिला नाम रखकर उस पर उसका अभिषेक किया गया। पुष्कल के नाम पर पुष्कलावती नाम देकर उस नगरी पर पुष्कल का अभिषेक हुआ। इस

प्रकार दोनों पुत्रों का राज्याभिषेक संपन्न कर भरत यथासमय अयोध्या लौट आये ।

अब लक्ष्मण के पुत्र अंगद एवं चंद्रकेतु के लिए राज्य का प्रबन्ध किया जाना था । राम ने लक्ष्मण पर उन दोनों के राज्य के चुनाव का भार सौंपा । लक्ष्मण ने अपना मत कारुपथ नामक देश के बारे में व्यक्त किया । श्रीराम ने अंगद के लिए कारुपथ देश तथा चंद्रकेतु के लिए चंद्रकान्त देश का निश्चय किया । कुमार अंगद के साथ लक्ष्मण तथा चंद्रकेतु के साथ भरत ने जाकर उन कुमारों का राज्याभिषेक किया और फिर लक्ष्मण एवं भरत अयोध्या वापस आये ।

समय व्यतीत होता गया । एक दिन यमराज मुनि का वेश धारण कर श्रीरामचंद्र के भवन में आये । उन्होंने लक्ष्मण से कहा, "वत्स लक्ष्मण, तुम श्रीराम को मेरा यह संदेश दो कि मैं एक महान महर्षि के दूत के रूप में किसी महान प्रयोजन से उनसे मिलने के लिए आया हूँ ।"

लक्ष्मण के द्वारा यह संदेश पाकर श्रीराम ने मुनि को सादर अन्दर बुला भेजा ।

मुनि वेशधारी यमराज ने श्रीराम के हाथों से अर्घ्य एवं पाद्य स्वीकार किया । इसके बाद वे बोले, "श्रीराम, हमें एकांत-वार्ता करनी है । विषय अत्यन्त गोपनीय है । हमारे वार्तालाप के बीच किसी का भी प्रवेश वर्जनीय है । यदि कोई आता है तो उसे आपको मृत्यु-दंड देना होगा । यदि आपको यह स्वीकार हो तो मैं आपको अपने आगमन का कारण बताऊँ!"

श्रीराम ने यमराज के आदेश को स्वीकार कर लक्ष्मण से कहा, "लक्ष्मण, राजभवन के द्वार से प्रतिहारी को हटाकर तुम स्वयं पहरा दो! हमारे वार्तालाप के मध्य यदि अन्दर किसी का प्रवेश होता है तो उसे मृत्यु-दंड का भागी बनना होगा! सावधान रहना!"

लक्ष्मण के जाने के पश्चात् यमराज ने श्रीराम से कहा, "श्रीराम, मैं छद्मवेश में उपस्थित यमराज हूँ । ब्रह्मा के आदेश पर यहाँ मेरा आगमन हुआ है । ब्रह्मा ने आपसे यह निवेदन करने को कहा है कि आपने रावण का संहार करने के हेतु ही पृथ्वी पर अवतार लिया था । आप स्वयं भगवान विष्णु हैं । आप पृथ्वीलोक में जिस कार्य से आये थे, वह संपन्न हो चुका है । अब आपके संवरण का समय आगया है । आगे आपको जब पृथ्वी पर

पुनः आना हो, आप आजाइयेगा ।"

श्रीराम ने मुस्कराकर कहा, "धर्मराज, आपके आगमन से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । मैं भी स्वधाम लौटने के लिए तत्पर हूँ ।"

राजभवन के भीतर जिस समय श्रीराम यमराज से वार्तालाप कर रहे थे, तभी द्वार पर दुर्वासा मुनि का आगमन हुआ । उन्होंने प्रतिहारी के स्थान पर खड़े लक्ष्मण से कहा, "लक्ष्मण, मैं इसी क्षण श्रीराम से मिलना चाहता हूँ ।"

लक्ष्मण ने विनीत स्वर में कहा, "महामुनि, मेरे भाई राजा राम एक आवश्यक कार्य में निमग्न हैं । आप कुछ देर प्रतीक्षा कीजिए और उचित समझें तो इस सेवक को बताइये कि आपका शुभ आगमन किसलिए हुआ और आप क्या चाहते हैं?" दुर्वासा मुनि अपनी यह अवमानना सहन नहीं कर सके, धिक्कार कर बोले, "लक्ष्मण, यदि तुम मुझे तुरन्त राम के पास नहीं ले जाओगे तो मैं ऐसा शाप दूँगा कि तुम्हारा यह सारा वंश ही नष्ट हो जायेगा ।"

लक्ष्मण ने क्षण भर सोचकर यही निर्णय किया कि भाई के हाथों यदि उन्हें मृत्यु-दंड मिलता है तो वह श्रेष्ठ है, पर कुल का नाश नहीं होना चाहिए । लक्ष्मण भवन के भीतर गये और और श्रीराम को दुर्वासामुनि के आगमन की सूचना दी ।

श्रीराम उठकर आये और दुर्वासा को प्रणाम कर पूछा, "मुनिवर, मेरे लिए क्या आज्ञा है?"

"मुझे तत्काल भोजन खिलाओ!" दुर्वासा ने

कहा ।

राम ने दुर्वासा के लिए उत्तम भोजन की व्यवस्था की । दुर्वासा भोजन करके सन्तुष्ट हो चले गये ।

दुर्वासा के जाने के बाद श्रीराम को यमराज के साथ निश्चित हुई शर्त का ध्यान आया । वे अत्यन्त व्याकुल हो उठे । लक्ष्मण ने उन्हें आश्वस्त कर कहा, "भैया, आप मेरी चिंता न करें! आप मुझे मृत्यु-दंड प्रदान कर अपने वचन का पालन करें!"

श्रीराम ने अपने मंत्रि-मंडल और पुरोहितों की सभा बुलाकर अपना धर्मसंकट बताया और उनसे परामर्श माँगा ।

सबने एकमत हो कहा, "श्रीराम, तुम लक्ष्मण को त्याग दो! लक्ष्मण का त्याग उनके

वध के समान ही है। वचन-भंग नहीं होना चाहिए !"

लक्ष्मण ने मूक रहकर श्रीराम को प्रणाम किया और अपने निवास को लौटे बिना ही सीधे सरयू की ओर प्रयाण किया। उन्होंने अपनी श्वास को स्तम्भित कर लिया। तब इंद्र विमान में अदृश्य रूप से आये और लक्ष्मण को सशरीर स्वर्ग में ले गये। लक्ष्मण के रूप में विष्णु का चौथा अंश विष्णु के अन्दर लय होगया।

लक्ष्मण के जाने के बाद रामचंद्र ने तुरन्त विशाल सभा बुलायी और कहा, "मैं भी लक्ष्मण की भाँति चला जाऊँगा। तुम लोग भरत के राज्याभिषेक का प्रबंध करो!"

भरत की व्याकुलता का पार नहीं रहा। उन्होंने कहा, "भैया, आपके बिना यह राज्य तो क्या, जगत ही सूना है। आप कुश-लव का राज्य-अभिषेक कीजिए। कोसल देश में कुश को और उत्तर कोसल में लव को राजपद दीजिए! हम शत्रुघ्न को संदेश भेजते हैं कि हम स्वर्ग के लिए प्रस्थान कर रहे हैं।"

भरत के सुझाव को स्वीकार कर कुश-लव का राज्य अभिषेक किया गया।

शत्रुघ्न को बुलाने के लिए मधुपुरी दूत भेजा गया। शत्रुघ्न ने भी अपने राज्य को दो टुकड़ों में बाँटकर सुबाहु तथा शत्रुघाती का राज्याभिषेक किया और अयोध्या को लौट आये।

श्रीराम के महाप्रयाण का वृत्तान्त सुनकर विभीषण सपरिवार अयोध्या पहुँचा। सुग्रीव ने अंगद का राज्याभिषेक करने के बाद अयोध्या में पदार्पण किया।

इसके पश्चात महाप्रस्थान की वेला में श्रीराम ने महीन वस्त्र धारण किया। हाथ में दाभ लेकर वे मौन हो चलने लगे। उनके साथ अत्यन्त भक्तिभाव से अंतःपुर की नारियाँ, भरत, शत्रुघ्न, मंत्री, राक्षस एवं वानर चलने लगे।

कुछ देर में श्रीराम सरयू-तट पर पहुँचे। श्रीराम ने सरयू में अपने चरण रखे। तभी उन्हें ब्रह्मा का आवाहन सुनाई दिया। श्रीराम, भरत, शत्रुघ्न को वैष्णव-शरीर प्राप्त हुए। श्रीराम का विष्णुरूप ब्रह्म-लीन होगया। उनके साथ अवतरित हुए सभी जन अपने-अपने धाम को प्राप्त हुए। (संपूर्ण)

नवकुबेर

कांचीपुरम में चंद्रनाथ नाम का एक वैश्य रहता था। उसने व्यापार करके करोड़ों रुपये कमाये। लोग उसे नवकुबेर कहकर बुलाने लगे। नवकुबेर के कई पुत्र और कई पुत्रियाँ हुईं। उसने सबके विवाह संपन्न किये। जामाताओं को अपने यहाँ रखकर रोजगार में लगा दिया। धन दिन दूना रात चौगुना बढ़ता गया। धीरे-धीरे उसके परिजनों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गयी कि उसका घर एक अच्छी ख़ासी कचहरी में परिणत होगया। नवकुबेर अपने रिश्तेदारों के बीच राजसी सुखों को भोगता हुआ अपना जीवन बिताने लगा।

लेकिन नवकुबेर के जीवन का एक और भी पक्ष था। वह घर से बाहर कानी कौडी भी खर्च न करता। दान-धर्म, तीर्थ-यात्रा तथा भगवान के नाम पर कभी एक पैसा देने का सवाल तो था ही नहीं, वह कभी किसी दीन-दुखी की भी मदद न करता।

एक दिन नवकुबेर के मकान के आगे एक साधु आकर खड़ा होगया। ज्ञानानन्द नाम के उस वैरागी साधु ने नवकुबेर से एक समय का भोजन देने का अनुरोध किया।

"अरे निकम्मे, ज़ाहिल, चोर! तुम यहाँ कहाँ से टपक पड़े?" नवकुबेर ने खीझकर पूछा।

"अगर मैं चोर होता तो मुझे भीख माँगने की क्या ज़रूरत थी?" साधु ने कहा।

इस बात को लेकर नवकुबेर और ज्ञानानन्द साधु में काफ़ी देर वाग्-संघर्ष चलता रहा। अंत में नवकुबेर ने यह सोचकर कि यह साधु उसका वक़्त बरबाद कर रहा है, उसे अपने नौकरों से निकलवा दिया। पर इसके बावजूद वह साधु जिद करके शाम तक ड्योढ़ी के सामने ही बैठा रहा।

साधु को धरना देते देखकर नवकुबेर ने

२५ वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित एक कहानी

अगले दिन जैसे ही नवकुबेर मुख्य द्वार से निकला उसे साधु ज्ञानानन्द के दर्शन होगये ।

"यह साधु शनीचर की तरह मेरे पीछे पड़ा हुआ है । उससे पूछ लो, वह फिर क्यों आगया है?" नवकुबेर ने यह कहकर एक सेवक को साधु के पास भेजा ।

"इस बार मैं तुम्हारे सेठ से कुछ माँगने नहीं आया हूँ, बस उनसे कुछ देर बात करना चाहता हूँ ।" ज्ञानानन्द ने कहा ।

नवकुबेर ने कहला भेजा कि छह माह तक उसके पास फुरसत नहीं है । ज्ञानानन्द चला गया और ठीक छह महीने बाद फिर आ उपस्थित हुआ। नवकुबेर ने इस बार भी कुछ बहाना बना दिया और कोई और समय दे दिया। साधु बड़ी सहनशीलता से नियत समय पर पहुँचता रहा । इस प्रकार एक वर्ष बीत गया । आख़िर नवकुबेर तंग आगया । उसने सोचा कि साधु से पिंड छुड़ाने के लिए एक बार उसकी बात सुन ही लेनी चाहिए ।

"मैं एक वर्ष से तुम्हारी गति-विधियों पर निगरानी रखता आ रहा हूँ। तुम अपने रिश्तेदारों पर भरोसा करके अंधे बने हुए हो। अच्छा हो कि तुम सत्य को जानने का प्रयास करो !" साधु ज्ञानानन्द ने कहा ।

"ओह! तो तुम मुझे मेरे सगे-सम्बन्धियों से नाता तोड़ने की सलाह दे रहे हो!" नवकुबेर ने पूछा ।

"वास्तव में, इनमें से कोई भी तुम्हारा अपना

धमकी दी, "तुम भले ही मर जाओ, पर मैं तुम्हें आहार नहीं दूँगा । देखता हूँ, तुम कब तक बैठे रहते हो?"

ज्ञानानन्द साधु मकान की ड्योढ़ी के सामने लगातार तीन दिन, तीन रात तक बैठा रहा । नवकुबेर के हितैषियों ने उसे समझाया कि शायद साधु उसे शाप दे बैठे, उसे नाराज़ मत करो, एक जून का खाना दे दो । पर नवकुबेर जिद पर अड़ गया । उसने ड्योढ़ी के द्वार बन्द करवा दिये और दूसरे द्वार से आने-जाने लगा ।

कुछ दिन बाद नवकुबेर प्रधान ड्योढ़ी के द्वार से बाहर निकला । उसे वह साधु दिखाई नहीं दिया । नवकुबेर को ऐसा महसूस हुआ, मानो उसने कोई बड़ा क़िला जीत लिया है । लेकिन

नहीं है। तुमने इनके लिए इतने ठाठ बाट किये हैं, इसीलिए ये तुम्हें पूछते हैं। आज तुम इनसे हाथ खींच लो और कल इनका रुख़ देखो! किसी को तुमसे सच्चा प्रेम नहीं है। तुम चाहो तो मैं इस बात को प्रमाणित भी कर सकता हूँ।" ज्ञानानन्द ने कहा।

नवकुबेर ने साधु को अपनी सम्मति दी। ज्ञानानन्द ने उसे एक उपाय बताया और चला गया।

इस घटना के चन्द दिन बाद नवकुबेर ने ऐसा स्वांग रचा, मानो वह किसी भयंकर रोग का शिकार बन गया है। उसने अपनी पत्नी रत्नमाला को बुलाकर कहा, "सुनो, मेरी मृत्यु निकट आ गयी है। मैंने इतना धन कमाया, पर एक भी पुण्य का काम नहीं किया अगर मुझे एक वर्ष का जीवन और मिल जाता तो कितना अच्छा होता!" यह कहकर वह वहीं लुढ़क गया।

रत्नमाला घबरा गयी। उसने तुरन्त वैद्य को बुलवा भेजा। वैद्य ने आकर जाँच की, पर वह रोग का निदान नहीं कर पाया। नवकुबेर साधु ज्ञानानन्द के निर्देशानुसार मृतप्राय व्यक्ति की तरह साँस खींचता हुआ पड़ा रहा।

नवकुबेर के आश्रय में जीनेवालों की संख्या दो सौ से कम नहीं थी। वे सब नवकुबेर को घेरकर रुदन करने लगे। कुछ लोग, जिन्होंने कभी ज्ञान-वैराग्य की बात सोची तक नहीं थी, यह उपदेश देने लगे, "इस धरती पर जन्म धारण करनेवाले को एक न एक दिन इस दुनिया को छोड़कर जाना ही पड़ता है। कोई भी यहाँ अमर बनकर जन्म नहीं लेता।"
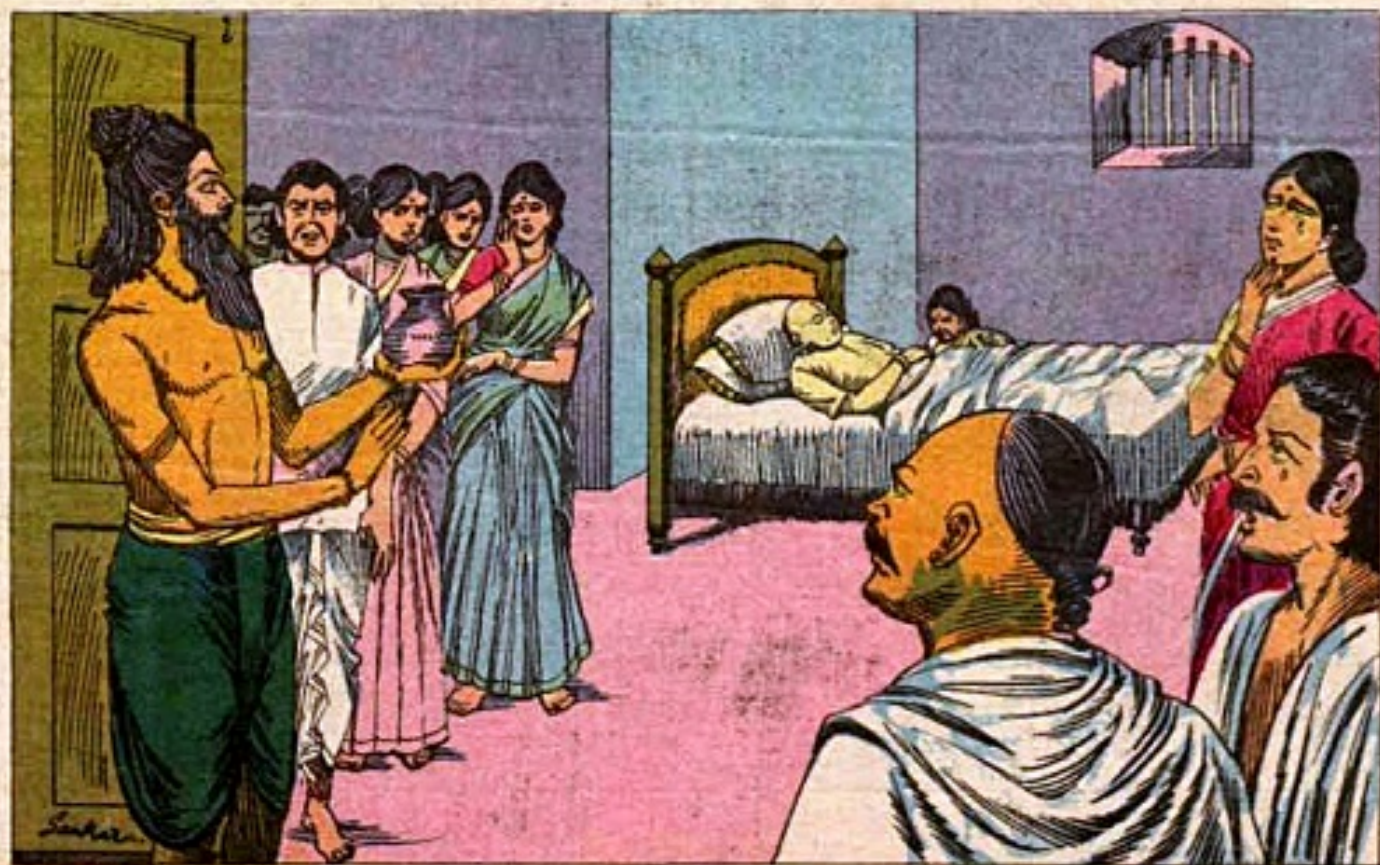
ठीक उसी समय साधु ज्ञानानन्द वहाँ आया। उसके हाथ में दूध से भरा हुआ लोटा था। उसने सबको मौन रहने का संकेत कर कहा, "तुम लोगों में से यदि सचमुच कोई अपने इस बुजुर्ग को बचाना चाहता है तो सामने आये, मेरे पास सिद्ध औषध तैयार है।"

नवकुबेर की पत्नी रत्नमाला तथा अन्य कुछ सम्बन्धी साधु के पैरों पर गिर पड़े और गिड़गिड़ाकर बोले, "साधु बाबा, आप इन्हें बचाइये! आप जो माँगेंगे, हम देंगे। आप इन्हें वह सिद्ध औषध देकर इनकी रक्षा कीजिए!"

"आप लोग अज्ञानी हैं। क्या इतना नहीं जानते कि कैसी भी सिद्ध औषध क्यों न हो, मृत व्यक्ति को आयु प्रदान नहीं कर सकती। पर एक अन्य उपाय मेरे पास है। आप में से अगर कोई इस सिद्ध औषध को सेवन कर ले तो उसके जीवन के कई वर्ष तुरन्त घट जायेंगे, पर ये जी उठेंगे। इन्होंने आपको अनेक वर्षों तक सारे सुख दिये हैं। क्या आप ऐसे व्यक्ति के लिए अपनी आयु के कुछ वर्ष देने को तैयार हैं? जो तैयार हो, इस औषधि का सेवन करे, ये जीवित हो जायेंगे।" ज्ञानानन्द ने अचूक उपाय बताया।

पर पत्नी-पुत्र, सगे-सम्बन्धी सब मौन खड़े रहे। साधु ने पूछा, "क्या इनके लिए कोई भी अपनी आयु त्यागने के लिए तैयार नहीं?" साधु के प्रश्न का किसी ने उत्तर नहीं दिया।

"इस महानुभाव ने अपना सारा जीवन आप को सुखी बनाने में लगा दिया। इन्होंने अपना परलोक नहीं सुधारा। सारा धन आप लोगों को अर्पित कर दिया। पर आज इनके लिए अपने प्राण तो क्या, कोई अपनी थोड़ी-सी आयु भी त्यागने को तैयार नहीं है।" साधु चकित होकर बोला।

इसी बीच नवकुबेर आँख खोलकर उठ बैठा। उसने कहा, "साधुबाबा, आज आपने मुझे इन झूठे नातों का ज्ञान करा दिया, मेरी अंधी आँखों को प्रकाश दिया। मैं आपका कृतज्ञ हूँ।" नवकुबेर को स्वस्थ देख सब चकित रह गये।

इसके बाद नवकुबेर ने अपने थोथे रिश्तेदारों को निकाला और अपनी अपार संपत्ति दान-पुण्य के कार्य में लगाने लगा।

बुरा-भला

[८]

परदेशी राजदीप ने शतनन्दन गाँव के निवासियों को साथ लिया और गाँव के मुखियों से मिलने चल पड़ा। राजदीप के साथ इतनी भारी भीड़ देखकर जय और विजय डर गये।

"हम सब अपने मुखियों से मिलना चाहते हैं।" सारे ग्रामवासियों ने एक स्वर में चिल्ला-कर कहा।

"क्यों मिलना चाहते हो ?" जय ने पूछा।

यह परदेशी राजदीप अपने को महाविष्णु बता रहा है। यह सत्य है या नहीं, हम यह बात अपने मुखियों से जानना चाहते हैं। अगर हमारे मुखियों ने यह बता दिया कि ये महाविष्णु हैं, तो हम सब लोग तुम दोनों दुष्टों का यहीं ख़ात्मा करेंगे।" ग्रामवासियों ने कहा।

जय-विजय भय से काँप उठे। वे मकान के अन्दर गये और मुखियों को यह वृत्तान्त सुनाकर बोले, "आप हमारे पिता हैं। अब आप ही हमारी मदद कर सकते हैं। अगर आप दोनों ने इस दुष्ट परदेशी राजदीप को महाविष्णु कहा तो हम दोनों आपकी आँखों के समक्ष आत्महत्या कर लेंगे। अब जैसे भी हो, आप हमारी रक्षा कीजिए।"

मुखियों की समझ में नहीं आया कि क्या करना चाहिए। वे कुछ देर मौन रहकर बोले, "तुम दोनों ने हमें मुसीबत में फँसाया है। एक बार हमें प्रियंवदा से बात कर लेने दो।"

इसके बाद जय-विजय दोनों मुखियों को पास के एक मकान में लेगये। वहाँ लेजाकर उन्होंने एक कक्ष के द्वार खोले। वह कक्ष अंधकार से भरा हुआ था और प्रियंवदा एक चटाई पर बैठी रो रही थी।

मुखियों के चेहरे मलिन होगये। वे उदास मुख लिये कमरे के अन्दर गये। प्रियंवदा ने एक

बार सिर उठाकर उन्हें देखा, फिर अपना माथा झुका लिया। प्रियंवदा की यह हालत देखकर कुछ क्षण तक उनके मुँह से बोल नहीं निकला। उन्हें यह मालूम नहीं था कि उनके बेटे जय-विजय प्रियंवदा को भी इतना कष्ट देंगे।

"बेटी प्रियंवदा, हमारे कारण तुम्हें अपार कष्ट झेलने पड़ रहे हैं। तुम्हारी तकलीफ़ को देखना हमारे वश की बात नहीं। हमारे इन दो बेटों की जान भले ही चली जाये, पर हम तुम्हारे प्राण बचायेंगे।" मुखियों ने कहा।

प्रियंवदा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

मुखियों ने सारा वृत्तान्त प्रियंवदा को सुनाया और बोले, "बेटी, जय और विजय दुष्ट और जिद्दी हैं। वे किसी का कहना नहीं मानते। फिर भी तुम्हारी हित-कामना को ध्यान में रखकर हम उस परदेशी को महाविष्णु बताने के लिए तैयार होगये हैं।"

"तो आप मेरे पास क्यों आये हैं?" प्रियंवदा ने खीझकर पूछा।

"तुम्हारे रूप एवं गुणों को देखकर हमें सचमुच ऐसा प्रतीत होता है कि तुम देवी हो। तुम्हारे अन्दर अनेक अद्भुत शक्तियाँ हैं। तुम चाहो तो जय-विजय का अंत कर सकती हो। पर हमारे बच्चों का संहार हो, यह दारुण पीड़ा हम सहन नहीं कर सकते। हम तुमसे यह चाहते हैं कि तुम हमारे बच्चों की मूर्खता और दुष्टता को दूर करो, लेकिन उनकी प्राण-हानि की बात मत सोचो।" छोटे मुखिया श्यामधन ने दीन स्वर में कहा।

"अपने बच्चों की मूर्खता और दुष्टता को तुमने ही बढ़ावा दिया है। तुमने उन पर कभी कोई

नियंत्रण नहीं रखा। गाँववालों पर भी तुम अपने पद की ख़ातिर अत्याचार करते रहे हो। तुम लोगों ने कभी यह विचार नहीं किया कि तुम्हारे कर्मों का कोई दुष्परिणाम भी हो सकता है। अब पानी सिर पर से निकल गया तो मेरे पास आये हो।'' प्रियंवदा बोली।

''बेटी, हम साधारण लोग हैं, बड़ी बातें कैसे समझ सकते हैं? तुम कुछ ऐसा उपाय करो कि सारी बात बन जाये। हमारे बच्चों के प्राण बचे रहें और तुम्हारा विवाह राजदीप के साथ संपन्न हो जाये।'' रामधन बोला।

प्रियंवदा कुछ देर सोचती रही। फिर बोली, ''मान लो, मैं कोई उपाय न बताऊँ, तब आप लोग क्या करेंगे ?''

''हम ग्रामवासियों को बता देंगे कि राजदीप महाविष्णु का अवतार है। हमारे मुँह से यह बात निकलते ही हमारे बच्चे ज़हर पीकर मर जायेंगे।'' रामधन ने कहा।

''आपके पुत्रों के लिए प्राणों का कोई ख़तरा नहीं है, इसके लिए मैंने एक उपाय सोच रखा है।'' प्रियंवदा ने कहा।

इसके बाद प्रियंवदा ने धीमे स्वर में मुखियों को सारी बातें बतायीं। मुखियों ने बड़े ध्यान से प्रियंवदा की बातें सुनीं और प्रसन्न मुख से कमरे से बाहर आगये।

मकान के सामने शतनंदन गाँव के सारे लोग जमा थे। उनके बीच राजदीप बैठा हुआ था। राजदीप बड़ी गहराई से इस बात पर विचार कर रहा था कि अगर मुखियों ने उसे अवतार पुरुष न कहा तो न मालूम ग्रामवासी उसके साथ कैसा

व्यवहार करेंगे ! जय-विजय ग्रामवासियों के समूह से हटकर एक ओर बैठे थे और बड़ी उद्विग्नतापूर्वक इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि पता नहीं उन्हें अपने पिताओं के मुँह से क्या सुनना पड़े । अगर उन्होंने राजदीप को महाविष्णु बता दिया, तो! जय और विजय दोनों के हाथों में ज़हर की पुड़ियें थीं । उन्होंने मरने का संकल्प कर लिया था ।

बड़ा मुखिया रामधन गला खँखार कर बोला, "मेरे ग्रामवासियों, हमारे शतनन्दन गाँव में आकर अनेक प्रकार से हमारी सहायता करनेवाले राजदीप के अन्दर अवतारपुरुष के अनेक लक्षण हैं, लेकिन केवल लक्षणों के आधार पर हम उसे अवतार पुरुष नहीं मान सकते । इन्हें अपनी महिमा प्रमाणित करनी होगी । इसके लिए मैं आपको एक उपाय बताता हूँ ।" इन शब्दों के साथ मुखिया ने उन्हें वह उपाय बताया ।

पास के वन प्रदेश में राजदीप और प्रियंवदा को ले जाना होगा । उन्हें एक विशेष स्थान पर खड़ा कर दिया जायेगा और उनसे एक हज़ार गज़ की दूरी पर सारे ग्रामवासी उन्हें घेरकर खड़े हो जायेंगे ताकि वे वहाँ से भाग न सकें । शर्त यह है कि सौ की गिनती पूर्ण होने तक राजदीप को प्रियंवदा के साथ अदृश्य हो जाना होगा । यही इनके अवतार होने का प्रमाण होगा । अगर ऐसा न हुआ तो प्रियंवदा जय और विजय के साथ विवाह करेगी और राजदीप हमारा गाँव छोड़कर चला जायेगा । हमने बहुत सोच-विचार के बाद यही निर्णय किया है ।

मुखियों की यह योजना जय-विजय सहित सारे ग्रामवासियों को पसंद आयी ।

किन्तु इससे पहले प्रियंवदा ने एक प्रबन्ध और कर लिया था । उसकी योजना वृक्ष के खोखल के अन्दर से जानेवाली सुरंग में से राजमहल पहुँचने की थी । इस योजना को पूरा करने के लिए उसे पाथेय की आवश्यकता थी । उसने गाँववालों से प्रार्थना की, "मैं जानती हूँ कि परदेशी राजदीप अवतारपुरुष हैं । हम दोनों यहाँ से अदृश्य होकर कुछ समय के लिए आकाश-भ्रमण करना चाहते हैं । वहाँ पर आप लोगों के प्रेम का स्मरण करने के लिए आप हमें कुछ खाद्यपदार्थ और जल प्रदान कीजिए !"

ग्रामवासियों ने प्रियंवदा और राजदीप को

खाद्य पदार्थों की भेंट की ।

जय-विजय यह सोचकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे कि अदृश्य होने जैसी घटना तो हो ही नहीं सकती । अब प्रियंवदा को हमारे साथ विवाह करना होगा और राजदीप को गाँव छोड़कर जाना होगा ।

प्रियंवदा और राजदीप को वन में ले जाया गया और उनके आदेश के अनुसार उसी वृक्ष के पास खड़ा कर दिया गया, जहाँ से प्रियंवदा उन्हें मिली थी । ग्रामवासी उनका पहरा देने के लिए एक हज़ार गज़ की दूरी पर खड़े होने के लिए जाने लगे । जाने से पहले राजदीप ने उन्हें सम्बोधित कर कहा—

"मेरे प्यारे ग्रामनिवासियो, अब आप लोग एक हज़ार गज़ की दूरी पर जाकर सौ की गिनती गिनेंगे । इसके बाद हम आप लोगों को दिखाई नहीं देंगे । इससे प्रमाणित हो जायेगा कि मैं विष्णु का अवतार हूँ । मैं आज के बाद आप लोगों के सामने नहीं आऊँगा, इसलिए मैं आपको अपना संदेश सुना रहा हूँ । जनता की शक्ति राजशक्ति से महान होती है । यदि कोई तुम पर अन्याय करता है तो तुम्हें उसे सहन न कर उसका सामना करना चाहिए । जय और विजय तुम लोगों से अधिक शक्तिशाली नहीं हैं । उनके भीतर जो राक्षस-अंश है, वह मैं अपने साथ ले जा रहा हूँ । उन्हें तुम लोग अपनी शक्ति के बल पर झुका लेना । आज तक तुम लोगों पर मनमाने रूप में शासन करनेवाले ये दोनों मुखिये अब पितातुल्य होकर तुम्हारी सहायता करेंगे । अब तुम अपना कर्त्तव्य करो! हम विदा लेते हैं ।"

समस्त ग्रामवासी एक हज़ार गज़ की दूरी पर खड़े होगये । अभी सौ की गिनती पूरी भी न हुई थी कि राजदीप और प्रियंवदा आँखों से ओझल होगये ।

प्रियंवदा ने आगे बढ़कर राजदीप को रास्ता दिखाया । वह उसे सुरंगवाले वृक्ष की खोखल में ले गयी । दोनों ने वृक्ष के तने में स्थित द्वार को खोला और सुरंग में प्रवेश कर अन्दर से द्वार की अर्गला चढ़ा दी ।

(अगले अंक में समाप्त)

ईमानदारी

पुष्पपुर के जमींदार अशोकसिंह अपने सेवकों की नियुक्ति करने में बड़े कुशल माने जाते थे। एक बार उन्होंने अपनी कचहरी के पहरे पर एक संतरी की नियुक्ति करनी चाही। इस पद के लिए आनन्द और सुदास नाम के दो नौजवान उनके पास आये। जमींदार अशोकसिंह ने पहली रात पहरे पर अनन्द को नियुक्त किया ।

दूसरे दिन उन्होंने आनन्द को बागवानी का काम करने के लिए कहा। आनन्द ने बड़ी तत्परता से पौधों को पानी लगाया और निराई आदि का कार्य किया। जमींदार अशोकसिंह ने उसे सूचित किया कि संतरी की नौकरी पर उसकी नियुक्ति के बारे में उसे तीन-चार दिन बाद सूचित किया जायेगा ।

अगले दिन ज़मींदार ने सुदास को पहरे पर नियुक्त किया और आनन्द की तरह ही उससे भी बागवानी के काम के लिए कहा। ज़मींदार ने देखा कि बागवानी का काम करते हुए सुदास बार-बार ऊँघने लगता है।

इसके बाद ज़मींदार अशोकसिंह ने सुदास से कहा, "तुम्हें मैंने कचहारी के संतरी के पद पर नियुक्त कर दिया है। आनन्द ने ऊँघे बिना अगले दिन बड़ी आसानी से बागवानी का काम किया था। इसका मतलब है कि रात के समय उसने ठीक से पहरा न देकर अपनी नींद पूरी कर ली थी। मैं संतरी के पद पर संतरी के योग्य आदमी ही चाहता हूँ, माली नहीं ।"
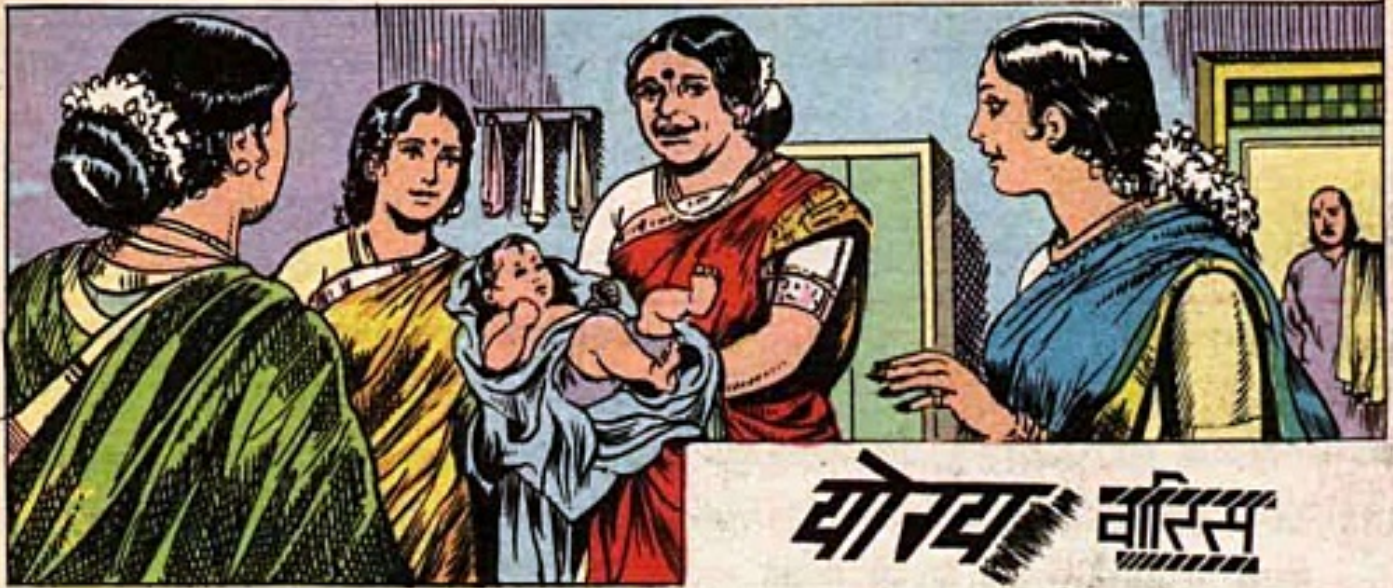
योग्य वारिस

राधानगर का सुदर्शन पटेल प्रथम श्रेणी का कंजूस आदमी था। वह लोगों के बीच तकरार पैदा करने में भी मशहूर हो चुका था। उसकी पत्नी सुंदरी भी उसी के अनुकूल प्रवृत्ति की थी। दोनों आग और घी के मेल से चलते थे। उन दोनों का एक ही लक्ष्य था धन जोड़ना। इसके अतिरिक्त उनके अंदर और दूसरा कोई विचार प्रवेश भी नहीं करता था।

सुदर्शन पटेल सदा यही सोचा करता था कि राधानगर में किन लोगों के बीच किस तरह तकरार पैदा की जाये और किसे किस बात को आधार बनाकर अदालत में जाने की सलाह दी जाये। अगर किसी को धन की आवश्यकता होती तो सुदर्शन स्वयं उसके पास पहुँच जाता और सूद-ब्याज के नाम पर झूठा हिसाब लिखकर मूलधन से तीन गुना अधिक धन वसूल कर लेता।

सुंदरी भी इसी तरह का धंधा करती। वह ज़रूरतमंद औरतों का लोटा-थाली आदि गिरवी रखकर उन्हें ब्याज पर रुपये दे देती।

सुदर्शन और सुंदरी का विवाह हुए पच्चीस वर्ष होगये। तभी उनके एक पुत्र हुआ। दोनों यह सोचकर अत्यंत प्रसन्न हुए कि उनका वारिस पैदा होगया है।

अड़ोस-पड़ोस की महिलाओं ने सुंदरी को पुत्र-प्राप्ति के लिए बधाई दी और कहा, "इतने वर्ष बाद घर में चिराग आया है। नामकरण धूमधाम से करो और सबको दावत दो!"

धूमधाम और दावत के बारे में सुदर्शन और उसकी पत्नी के बीच गहरा विचार-विमर्श हुआ। अंत में उन्होंने निर्णय किया कि पुत्र के नामकरण के साथ वे अपने विवाह की रजत-जयंती भी मनालें। उसमें अधिक से अधिक लोगों को निमंत्रित किया जाये। बेटे को तो उपहार मिलेंगे ही, उन्हें भी उपहार प्राप्त होंगे।

जवाहर चौधरी

अपनी इस योजना को ध्यान में रखकर सुदर्शन ने सारे गाँववालों के के लिए भारी पैमाने पर दावत का प्रबंध किया। लेकिन सुदर्शन की लालची प्रवृत्ति को सारे गाँव वालों ने भाँप लिया। वे उत्सव के दिन आये और उन्होंने झूले में लेटे बालक को ही उपहार दिये, फिर कहा, "पच्चीस वर्ष बाद ही सही, पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ है, इसे हम अंगूठी भेंट कर रहे हैं।"

दावत की समाप्ति के बाद रात को सुदर्शन और सुंदरी आये हुए उपहारों का मूल्यांकन करने बैठे। वे हिसाब जोड़ने लगे कि दावत का खर्च निकालाकर उन्हें कुल कितनी बचत हुई है।

तभी सुदर्शन के मन में हलकी-सी शंका आयी। उसने उपहार में आयी हुई अंगूठियों में से एक अंगूठी को कसौटी पर कसकर देखा। फिर चिल्लाकर बोला, "अरे सुंदरी, हमें धोखा दिया गया है। हम लुट गये।" फिर कुछ और अंगूठियों को कसौटी पर कसा, उसके दुख का ठिकाना न रहा, बोला, "ये सभी अंगूठियाँ पीतल की हैं। इन पर सोने का पानी मात्र है। कम्बख़त इतना ठूँसकर खाकर गये हैं और उपहार के नाम पर कौड़ी क़ीमत की चीज़ भी नहीं दे गये।"

"हाय, ऐसा धोखा!" सुंदरी भी ज़ोर से चिल्ला उठी। फिर किसी शंका से प्रेरित हो दौड़कर अंदर गयी और सारा घर छानकर लौट आयी। फिर मुँह लटकाकर बोली, "दुष्ट लोग, दावत उड़ाकर जाते समय मेरे पास गिरवी रखे सारे बर्तन भी उठा ले गये हैं।" यह कहकर वह क्षोभ से बाल नोंचने लगी।

अभी पति-पत्नी अपनी किस्मत को कोस रहे थे, इस बीच लड़का रो पड़ा।

सुंदरी अपने बेटे को गोद में लेकर पुचकारने लगी। बच्चे की मुटठी बंद थी। उसने उसे खोलकर देखा तो उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही। बच्चे की मुटठी में किसी का दो लड़ा सोने का हार था। तभी सुदर्शन भी वहाँ आ पहुँचा। सोने का हार देख उसके आनन्द का ठिकाना न रहा। वह बोला, "सुंदरी जो हम नहीं कर पाये, वह हमारे बेटे ने कर दिखाया है। इसने प्रमणित कर दिया है कि यह हमारा योग्य वारिस है।
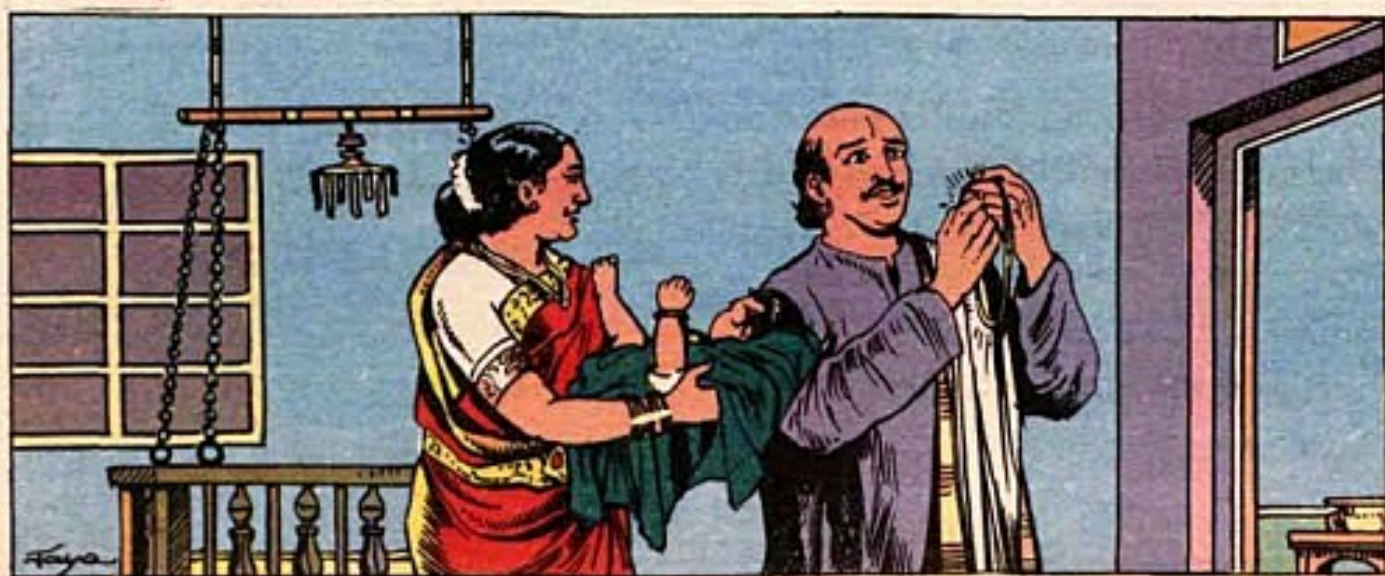
प्रकृति के आश्चर्य

उत्तर एवं दक्षिण ध्रुवप्रदेशों में उत्तर ज्योतियाँ और दक्षिण ज्योतियाँ नाम की रश्मियाँ दिखाई देती हैं। सूर्य से प्रसारित होने वाले विद्युत-कण जब ध्रुवों के ऊपर पृथ्वी के चुंबक क्षेत्र से मिलते हैं, तब ये रश्मियाँ निकलती हैं। इन्हें अरोरा बोरिलिस और अरोरा अस्तालिस भी कहते हैं।

ध्रुवप्रदेश की रश्मियाँ

शीतल भालू

आस्ट्रेलिया के कोला जाति के भालू ग्रीष्मकाल में, अपने मुँह से उत्पन्न होने वाले लाल जल को अपने बदन पर मलकर बाहरी गर्मी से अपनी रक्षा करते हैं।

मरुभूमि की वर्षा

मरुभूमि के प्रदेशों पर अक्सर वर्षा होती है, फिर भी वहाँ की ज़मीन खुश्क बनी रहती है। मरुभूमि के ऊपर की हवा में उष्णता बहुत अधिक होती है, इसलिए वर्षा की बूंदों के ज़मीन तक पहुँचने के पूर्व ही वे वाष्प में परिवर्तित हो जाती हैं और ज़मीन खुश्क रहजाती है।
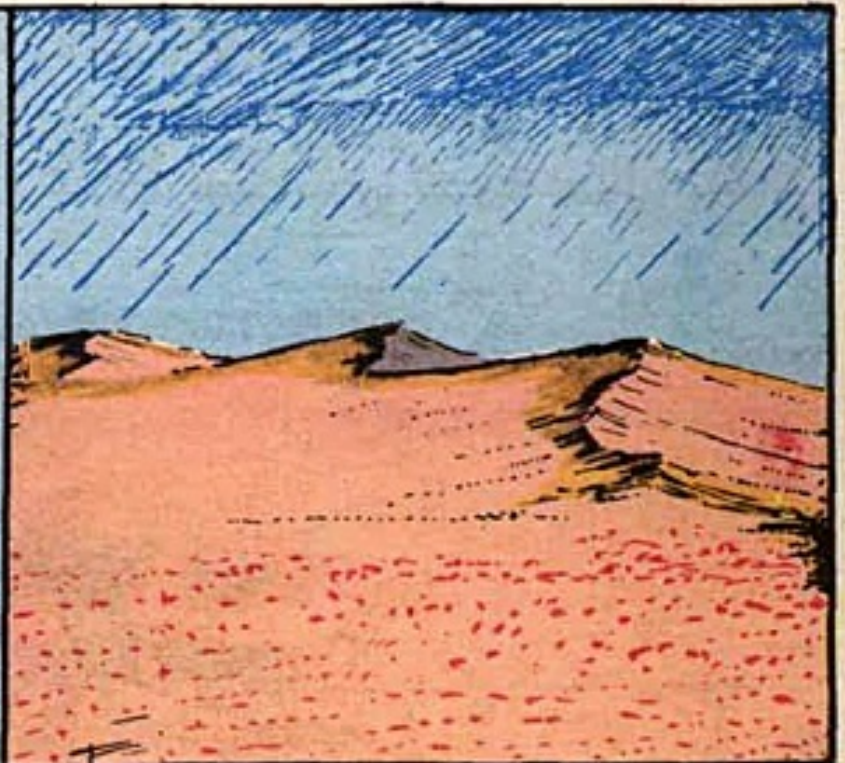
मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक उत्कृष्ट मासिक पत्र

* चन्दामामा हमारे पुराण व साहित्य के श्रेष्ठ रत्नों को क्रमबद्ध रूप में प्रदान करता है ।
* व्यापक दृष्टिकोण को लेकर विश्व साहित्य की अद्भुत काव्य कथाओं को सरल भाषा में प्रस्तुत करता है ।
* मृदुहास्य, ज्ञानवर्द्धक तथा मनोरंजक सुन्दर कहानियों द्वारा पाठकों को आकृष्ट करता है ।
* हमारी पुराण गाथाओं को प्रामाणिक रूप में परिचय करता है ।
* हास्यपूर्ण प्रसंगों तथा व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने वाले शीर्षकों के साथ पाठकों का उत्साह वर्द्धन करता है ।
* चन्दामामा केवल आपके जीवन में ही नहीं बल्कि आपके बन्धु एवं मित्रों के जीवन में भी रचनात्मक पात्र का व्यवहार करता है । इसलिए आप अपने घनिष्ट मित्रों को चन्दामामा भेंट कीजिए ! उपहार में दीजिए !

बच्चों के लिए प्रस्तुत चन्दामामा, पाठकों में नवयौवन का उत्साह एवं आनन्द प्रदान करता है ।

तेरह भाषाओं में प्रकाशित चन्दामामा का साप किसी भी भाषा का ग्राहक बन सकते हैं !

तेलुगु, तमिल, हिन्दी, अंग्रेज़ी, असामी, बंगाली, गुजराती, कन्नड, मलयालम, मराठी, उडिया, पंजाबी और संस्कृत ।

वार्षिक चन्दा: रु. ३०-००

आप किस भाषा का चन्दामामा चाहते हैं, इसका उल्लेख करते हुए निम्न लिखित पते पर अपना चन्दा भेजिए:

डाल्टन एजेन्सीस

चन्दामामा बिल्डिंग्स,

वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ नवम्बर १९८७ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

M. Natarajan   V. M. Omar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ सितम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

जुलाई के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : दुर्गम राह !

द्वितीय फोटो : क्रूर निगाह !!

प्रेषक : प्रेम किशोर, मानिकपुर - ४९६ ५५२, रायगढ़ (म. प्र.)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३०-००

चन्दा भेजने का पता :

डॉल्टन एजेन्सीस, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास -६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adapting them in any manner will be dealt with according to law.

A BRIGHT NEW TRADITION IS BUILT by THE READERS OF

THE HERITAGE

FEATURES AND FICTION FOR TODAY AND TOMORROW

The span of one and half years is not a long time, yet given will and goodwill, enough of a time to build a healthy, meaningful and intelligent reading tradition.

SLOWLY BUT STEADILY THE ELITE OF INDIA AND MANY LOVERS OF INDIAN CULTURE ABROAD ARE UNITING IN THE HERITAGE.

* THE HERITAGE reveals the fourth dimension of life to you—through series like *"The Other Experience"* and *"Fables and Fantasies for Adults"*.
* THE HERITAGE brings to you the best of creative literature of Contemporary India—stories, novels and poems.
* THE HERITAGE features pictorial articles on places and monuments delving into their *roots*.
* THE HERITAGE takes you to a tour of the *Little-Known India*.

राम और श्याम से विचित्र प्राणी की मुलाकात

पारले

everest/86/PP/412-hn

Treat yourself to something special!
Big BON-BONs from nutrine
Tasty, creamy, fruity delights
in four delicious flavours
nutrine BON BON
nutrine BON BON
BON BON
nutrine BON BON
GREAT NEW BON BONS
from nutrine,
naturally!
MILK CREAM
LEMON COCONUT
FRUITY • CHOCOMINT
BON BON
nutrine
BON BON
nutrine India's largest selling sweets
Nutrine Confectionery Company Private Limited, Chittoor, A.P.
CLARION/NC/8571